स्नातकोत्तर कार्यक्रम (Post Graduate Programme)
इतिहास (MAHY)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इतिहास न केवल यथार्थ तथ्यो का संकलन है बल्कि अतीत तथा वर्तमान को जोड़ने वाला एक सेतु है। साथ ही अतीत से वर्तमान तक की प्रगति एवं भावी पीढो के लिए निष्कंटक मार्ग के दिशा–निर्देशन के मापन का एकमात्र यंत्र है। व्यक्ति इतिहास से अपने अतीत तथा पूर्वजो की उपलब्धियों का ज्ञान प्राप्त करता है। इतिहास सामाजिक विज्ञान का मूल स्रोत है जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास का वर्णन अनिवार्य तथा महत्वपूर्ण है। इतिहास में किसी देश, समाज तथा मनुष्य से सम्बन्धित सभी घटनाओं का यथार्थ वर्णन होता है। भारतीय इतिहास में घटना की व्याख्या में कारण–श्रृंखला तथा परिणाम श्रृंखला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों को अपने अतीत की गौरवशाली भारतीय संस्कृति को सम्यक ढंग से समझने के साथ ही तत्कालीन समग्र परिवर्तित परिस्थितियो का ज्ञान प्रदान कराना है। इस विषय की महत्ता अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे सिविल सेवा एवं राज्य सिविल सेवाओं में एक वैकल्पिक विषय के रूप ज्ञात है। साथ ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त होते है।

HISTORY (इतिहास) (MAHY)

Year/वर्ष	Paper No./ पेपर नं0	Course Code/ पाठ्य क्रम कोड	Title of Course/ पाठ्यक्रम का शीर्षक	Credits/ क्रेडिट	Compulsory /Elective अनिवार्य / वैकल्पिक
Compulsory Core Course/ विषय केन्द्रित अनिवार्य पाठ्यक्रम					
प्रथम वर्ष	5031	MAHY-01	प्राचीन एवं मध्यकालीन समाज	8	अनिवार्य
	5032	MAHY-02	आधुनिक विश्व	8	अनिवार्य
	5033	MAHY-03	इतिहास दर्शन एवं लेखन	8	अनिवार्य
	Discipline-Centric Elective Course /विषय केन्द्रित वैकल्पिक पाठ्यक्रम				
	5034 or 5035	MAHY-04 or MAHY-05	भारत में धार्मिक विचारधारा एवं आस्था अथवा भारतीय पारस्थितिकि एवं पर्यावरण का इतिहास	8 or 8	वैकल्पिक
प्रथम वर्ष का कुल क्रेडिट				**40**	
Compulsory Core Course/ विषय केन्द्रित अनिवार्य पाठ्यक्रम					
द्वितीय वर्ष	5036	MAHY-06	भारतीय राजनैतिक संरचना	8	अनिवार्य
	5037	MAHY-07	भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास	8	अनिवार्य
	5038	MAHY-08	आदिकाल के भारतीय सामाजिक संरचना का क्रमिक विकास	8	अनिवार्य
	Discipline Centric Elective Course/ विषय केन्द्रित वैकल्पिक पाठ्यक्रम				
	5039 or 5040	MAHY-09 or MAHY-10	प्लासी से विभाजन तक : आधुनिक भारत का इतिहास अथवा पर्यटन उद्भव एवं विकास	8 or 8	वैकल्पिक
	द्वितीय वर्श का कुल क्रेडिट **40**				
	सम्पूर्ण कार्यक्रम का कुल क्रेडिट **80**				

MAHY-01
प्राचीन एवं मध्यकालीन समाज

इकाई–1 यूरोप में सामन्तवाद का क्रमिक विकास

यूरोप समान्तवाद की परिभाषा

सामन्तवाद की उत्पत्ति और उसका क्रमिक विकास

- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
- जागीदारी की उत्पत्ति
- माफी भूमि की उत्पत्ति

यूरोप में सामन्तवादी प्रथाका विस्तार

सामान्ती जोत के सिद्धान्त

- नियमित अधीनता आक स्वामी भक्ति
- उत्तराधिकार
- ज्येष्टाधिकार
- महिला उत्तराधिकार आक्र प्रतिमाल्यता
- उपासमन्तवाद
- राहत और सहायक साधन
- स्वामी भक्ति का लोचान

इकाई–2 यूरोप में मध्यकालीन राजनीतिक विचारधारा और राजनैतिक संगठन

मध्ययुग के आगमन के समय यूरोप की राजनैतिक व्यवस्था

सामन्तवाद के उद्‌भव का विकास में विभिन्न धारणाएँ

- जूनर की धाराणा
- पीरेन का मत
- माक ब्लाच की धारणा
- पेरी एंडरसन के विचार

सामन्तवाद का स्वरूप

- सामन्तवाद के विभिन्न घटक
- राजा वा सामन्तों के पारस्परिक सम्बन्ध

मध्यकालीन युग के विभिन्न देशों में राजतंत्र की प्रगति

- पश्चिम फ्रांस
- पूर्वी फ्रेकिश राज्य (जर्मनी के प्रदेश)
- इंग्लैण्ड
- स्केडनेविया
- स्पेन
- इटली
- रूस

इकाई–3 सामन्तवाद की श्रेणियॉ एवं स्वरूप

सामन्तवादी वातावरण और दों सामन्ती युग

यूरोप में सामन्तवाद का उदय

फ्रान्स की विविधता : दक्षिण और नौरमंण्डी

इटली

जर्मनी
ऐग्लो सेक्सन इंग्लैण्ड
उत्तरी पश्चिमी स्पेन

इकाई–4 टर्की की राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज
टर्की का राजीनति का विकास और प्रारूप
टर्की की सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था

- समाज का स्वरूप
- सामाजिक वर्गीकरण
- कानून व्यवस्था
- मुख्य तत्कालीन संस्थाएँ

आर्थिक व्यवस्था

इकाई–5 मध्यकालीन यूरोप समाज का पतन
सामन्तवाद में संकट
वाणिज्य एवं व्यापार का पुनरूत्थान
जहाज निमाण एवं नौपरिवहन में तकनीकी विकास
मुडा एवं लेन–देन का विकास
शहरो का उद्‌भव
मध्यम वर्ग का उदय
किसान विद्रोह
राष्ट्र राज्यों का उत्थान
बारूद को प्रयोग
केन्द्रीय शक्ति की स्थापना

इकाई–6 यूरोप में 18वी शताब्दी में कृषि व्यवस्था
18वी शदी के पहल के युग में कृषि व्यवस्था
खेती के प्राचीन तरीके
18वी शदी के इंग्लैण्ड में खती के तरीको में परिर्वतन के लिए परिस्थितियॉ
इंग्लैण्ड में कृषि की नवीन पद्धति
18वी शदी में अन्य देशों में कृषि
इग्लैण्ड में नवीन कृषि का प्रभाव

इकाई–7 18वी शदी में यूरोप के कृषक विद्रोह
इंग्लैण्ड में 18वी शदी में जडबंदी आन्दोलन
फान्स में कृषको की दशा
जर्मनी के राज्यों में सुधार
आस्ट्रिया–हंगरी
रूस में विद्रोह(1703–1772)
रूस में 1773–75 का कृषक विद्रोह
यूरोप में अन्य देशों में स्थिति

इकाई–8 नगरो व शहरों का विकास एवं यूरोप में नगरीकरण
प्राचीनकाल में नगरों की आवादी व बनावट
नगरों की आवादी में वृद्धि व उसके आकडें
जनसंख्या में बृद्धि के कारण
ग्रामों से नगरों की ओर पलायन
नये नगरो का स्वरूप

इकाई–9 कारखाना एवं श्रमजीवी वर्ग
फैक्ट्री सिस्टम

- फैक्ट्री क्या है
- फैक्ट्री सिस्टम कैसे शुरू हुआ
- एक काल्पनिक फैक्ट्री का कार्य विन्यास

फैक्ट्री सिस्टम एवं औद्योगिक क्रांन्ति

फैक्ट्री सिस्टम का सामाजिक असर
बुराईयॉ
बुराईयों को दूर करने के प्रयास एवं साधन

- संसदीय प्रयास
- समाज सुधारक एवं अंवधनीति
- सुधारक यत्न जारी रहें
- सैडलर के प्रयत्न
- शसले का कानून

इकाई–10 यूरोप में औद्योगिक अर्थ व्यवस्था : कृषि और उद्योग, व्यपार औश्र व्यपारिक संघों के मध्य संबन्ध
औद्योगिक अर्थव्यवस्था अभिप्राय
प्रेरक तत्व
कृषि और उद्योग
व्यापार और व्यापारिक संघ

इकाई–11 उदावाद और यूरोप में संवैधानिक विकास
उदावाद अभिप्राय
उदारवाद की आधारभूत मान्यताएॅ
यूरोप में उदारवादी चेतना का विकास बदलते सैद्धान्तिक प्रतिमान
ब्रिटिश उदारवाद और संविधानवाद
यूरोप में अन्य देशों में उदारवाद और संवैधानिक विकास पर उसका प्रभाव

इकाई–12 18वी शदी में यूरोप का धार्मिक एवं बौद्धिक जीवन
यूरोप में आधुनिक संस्कृति का अभ्युदय व प्रबुद्धकाल
धर्मसुधार आन्दोलन से 17वी सदी तक यूरोप का धार्मिक जीवन
18वी शदी में धार्मिक जीवन का विश्लेषण
बौद्धिक जीवन के आयाम–दार्शनिक और विचारक
बौद्धिक जीवन के आयाम– विज्ञान,सामाजिक ज्ञान व शिक्षा
बौद्धिक जीवन के आयाम–कला और साहित्य

इकाई–13 औद्योगिक क्रान्ति
ब्रिटेन में औद्योगिक क्रान्ति प्रारम्भ होने के कारण
औद्योगिक क्रान्ति का आरम्भिक दौर (1760–1830)
औद्योगिक क्रान्ति का द्वितीय दौर
औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम
महत्व
औद्योगिक क्रान्ति का यूरोप में मन्द गति से प्रसार

इकाई–14 औद्योगिक के बाद
औद्योगिक पूॅजीवाद
कारखाना पद्धति
आर्थिक असन्तुलन
नगरों का विकास
जनसंख्या में वृद्धि
रहन–सहन के स्तर में सुधार
आर्थिक साम्राज्यवाद
मजदूरों के लिए राजनीतिक अधिकार
उद्योगीकरण के बाद वैचारिक प्रतिक्रियाएॅ

- हस्तक्षेयप की नीति

- सरकारी नियम तथा सामाजिक विधान
- यूरोपियाई समाजवाद
- कार्ल–मार्क्स

भौतिकवाद का विकास
- प्रकृति विज्ञान का विकास
- साहित्य और कला पर प्रभाव

इकाई–15 फ्रांस की क्रांन्ति– राज्य का स्वरूप एवं बुद्धिजीवी वर्ग और क्रान्ति
प्रचलित संरचनाएँ
राजनीतिक संरचना
धार्मिक संरचना
आर्थिक संरचना
बुद्धिजीवन वर्ग
- मोन्टिस्क्यूं
- वाल्टेयर
- जान जैफ रूसों
- अन्य विचारक

राज का बदलता हुआ स्वरूप

इकाई–16 फ्रांस की क्रान्ति का प्रभाव
फ्रांस पर प्रभाव
- स्वेच्छाचारी व निरंकुश बूबों राजतंत्र का अंत
- समाजिक व्यवस्था पर प्रभाव
- चर्च की सर्वोच्च स्थिति में गिरावट
- सामन्तवर्ग के महत्व की समाप्ति
- बुर्जुआं (मध्यम वर्ग) एवम निम्न मध्यम वर्ग की दशा में सुधार
- बौद्धिक वैचारिक व सांस्कृतिक प्रभाव
- न्याय व्यवस्था पर प्रभाव
- मानव अधिकारों की घोषणा
- प्रशासनिक एवं संवैधानिक सुधार
- लोक निर्माण कार्य
- हानिकारक प्रभाव

इंग्लैण्ड पर प्रभाव
- क्रान्ति का स्वागत
- क्रान्ति का विरोंध
- पिट द्वारा इंग्लैण्ड में प्रतिक्रियावादी नीति का क्रियान्वयन
- व्हिग पार्टी में फूट
- आयर लैण्ड में राष्ट्रीय आन्दोलन
- आंग्ल साहित्य पर प्रभाव
- यूरोप पर प्रभाव
- अधिकारों के लिए संघर्ष का सूत्र पात्र
- क्रान्तिकारी युद्ध
- यूरोप में प्रतिक्रिया का युग
- सम्मेलनों का युग
- यूरोपी साहित्य पर प्रभाव

विश्वव्यापी स्थाई प्रभाव

- स्वतंत्रता की भावना
- समानता
- राष्ट्रीयता की भावना
- प्रजा तंत्र की विचारधारा
- बन्धुत्व
- समाजवाद
- शैक्षणिक क्षेत्र में परिवर्तन
- वाल्टेयर

इकाई–17 नेपोलियन का उत्थान (कोन्सुलशिप 1799–1804)

- आन्तरिक समस्याएँ
- प्रशासनिक
- वित्तीय
- धार्मिक
- शिक्षा प्रणाली
- नागरिक प्रशासन
- विदेश नीति

नेपोलियन सम्राट के रूप में नेपोलियन का पतन

- कन्टीनेन्टल सिस्टम, बर्लिन घोषणा 1806
- मिलान घोषणा 1807, फोन्टेनब्लू घोषणा, 1810
- पेपल राज्य का बिलय 1809
- पुर्तगाल से युद्ध स्पेन के सम्राट चार्ल्स चतुर्थ का गद्दी से उतरना
- प्रायद्वीप का युद्ध
- आस्ट्रिया से युद्ध 1809
- रूस का आक्रमण 1812

नेपोलियन के साम्राज्य का विनाश

- चतुर्थ गुट
- नेपोलियन की रूस और प्रशिया पर विजय
- कुसिच की संन्धि 1813, लुटजेन और बाटजेन का युद्ध 1813
- आस्ट्रिया का नेपोलियन के प्रति दृष्टिकोण
- लिपजिंग का युद्ध 1813
- संयुक्त देशो का फ्रांस पर आक्रमण 1814
- फोन्टेन ब्लू की संन्धि 1814
- नेपोलियन का ऐल्बा से वापसी 1815
- वाटरलू का युद्ध 1815

नेपोलियन की भूलें

- और राष्ट्रीयता, जर्मनी, इटली, पोलैण्ड, तुर्की साम्राज्य
- और वैज्ञानिक प्रगति

इकाई–18 रूस की अर्थ व्यवस्था–एक पृथक संसार

सामन्तवादी रूस की अर्थव्यवस्था

- ऐतिहासिक सन्दर्भ
- उद्योग नगर तथा व्यापार
- कृषि दासता का अंत

रूसी अर्थव्यवस्था औद्योगिक पूँजीवाद के युग (1861–1900

औद्योगिक क्रान्ति समापन तथा पूँजीवाद उद्योग का उत्थान
रूस में समाजवाद
स्टालीपिल सुधार
क्रान्ति के युग में वित्तीय व्यवस्था
- आन्तरिक व बाह्य व्यपार में बृद्धि
- इन्डस्ट्री का राष्ट्रीयकरण तथा श्रमजीवियों का नियंत्रण

सोशलिस्ट सरकार की आर्थिक नीति
नेप अथवा नवीन वित्तीय योजना

इकाई–19 अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम
अमेरिका : खोज का उपनिवेशन
उपनिवेशन के कारण
उपनिवेशो की प्रकृति
वाणिज्यवाद
अमेरिका में वाणिज्यवाद
ब्रिटिश नीति में परिवर्तन
अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम
स्वतंत्रता संग्राम का परिणाम

इकाई–20 अमेरिकी क्रान्ति का महत्व
अमेरिका के इतिहास के सन्दर्भ में महत्व
- राजनीतिक क्षेत्र में
- आर्थिक क्षेत्र में
- कृषि क्षेत्र में
- नौ परिवहन के क्षेत्र में
- सामाजिक क्षे़त्र में

विश्व इतिहास के परिप्रेक्ष्य में महत्व
- विचारधारा के रूप में
- इंग्लैण्ड पर प्रभाव
- फ्रांस पर प्रभाव
- आयरलैण्ड पर प्रभाव
- भारत पर प्रभाव

इकाई–21 अमेरिकन संविधान का निर्माण
- उपनिवेशों की स्थापना
- असन्तोष की लहर
- स्वतन्त्रता की ओर
- संविधान निर्माण प्रक्रिया
- वर्तमान संविधान की रचना
- संविधान अनुमोदन

MAHY-02

आधुनिक विश्व

खण्ड–1

इकाई–1 आधुनिक विश्व

19वी शताब्दी मे आस्ट्रिया

मैटर्निख की शासन नीति

मैटर्निख की गृहनीति

मैटर्निख की विदेश नीति

मैटर्निख और वियना सम्मेलन

संयुक्त व्यवस्था

मैटर्निख का पतन

मैटर्निख के व्यक्तित्व का मूल्यांकन

इकाई–2 यूरोप में 1830–70 ई0 के मध्य कृषि विस्तार

भूमि का उपजाऊपन

- जानवरों की खाद का उपयोग
- भूमि को ऊसर छोडने की विधि
- फील्ड व्यवस्था

18वी सदी में कृषि में प्रगति

- हरी घासो एवं सर्द ऋतृ की जडों की खोज
- भूमि की घेराबन्दी

कृषि सुधारों के प्रभाव

- 1830 एव 1870 के मध्य विस्तार एवं कृषि में प्रगति

इकाई–3 पूर्वी समस्या एवं क्रिमिया का युद्ध

पूर्वी समस्या

- पूर्वी समस्या क्या थी
- समस्या का आधार
- टर्की साम्राज्य के पतन के कारण
- पूर्वी समस्या के प्रति प्रमुख यूरोपीय शक्तियों का दृष्टिकोण एवं निहित स्वार्थ
- रूस की बाल्कन प्रदेश में महत्वकांक्षाएँ
- तुर्की साम्राज्य में इंग्लैण्ड रूचि एवं स्वार्थ

- तुर्की साम्राज्य में आस्ट्रिया के हित
- तुर्की साम्राज्य में फ्रांस की रूचि

रूस की विस्तारवादी नीति एवं पूर्वी समस्या

क्रीमियॉ युद्ध में पूर्ववर्ती कतिपय महत्वपूर्ण घटनाएँ

- कुजक कैनाईजी की सन्धि
- जैसी की सन्धि
- बुखारेस्ट का सन्धि
- यूरोपीय शक्तियों के दृष्टिकोण में परिवर्तन
- ईसाई राष्ट्रों का विद्रोह
- एड्रियानोपल की सन्धि
- मेहमल अली की महत्वकान्क्षा
- आकीयर एकेल्सी की सन्धि

क्रीमिया युद्ध (1854–56 ई0)

- क्रीमिया के कारण
- टर्की में बढता रूसी प्रभाव
- टर्की के बटवारे की रूसी पेशकस
- पवित्र स्थानों के संरक्षण का झगडा
- ईसाई प्रजा पर संरक्षण की रूसी माग
- रूस द्वारा बैलेशिया व मोल्डेविया पर अधिकार
- वियना वोट
- टर्की द्वारा युद्ध की घोषणा
- साईनोप का कत्लेआम
- इग्लैण्ड तथा फ्रांस द्वारा संयुक्त चेतावनी
- क्रीमिया युद्ध की घटनाएँ
- क्रीमिया युद्ध का अंन्त व पेरिस की संन्धि
- क्रीमिया युद्ध व पेरिस संन्धि की समीक्षा
- क्रीमिया युद्ध के प्रमुख राष्ट्रों पर प्रभाव

इकाई–4 इटली का एकीकरण

- नवीन युग की शुरूवात
- नेपोलियन और इटली
- 1815 ई0 में इटली
- इटली के एकीकरण की बाधाएँ
- एकीकरण में सहायक तत्वों का उदय
- कार्बोनारी
- आर्थिक विकास
- प्रारम्भिक विद्रोहो का इटली पर प्रभाव
- लेखकों के प्रयास
- मेजिनी और युवा इटली
- उदार राज तन्त्रवादी
- पोप की उदारवादी नीति
- 1848 की क्रान्ति और इटली

एकीकरण यथार्थता की ओर

- विक्टर ऐमेनुअल द्वितीय (1849–1870)
- काबूर(1810–1861)
- क्रीमिया का युद्ध और काबूर
- नेपोलियन का सहयोग एवं लोम्बाडी की प्राप्ति
- आर्सिनी कान्ड
- प्लोम्वियर्स समझौता
  - आस्ट्रिया–सार्डीनिया युद्ध
  - बिलाफ्रेका की विराम संन्धि
  - मध्य इटली का विलय
  - नेपल्स और सिसली का विलय
  - गैरी बाल्डी (1807–1882)
  - सिसली विद्रोह
  - नेपल्स का अधिकार
  - काबूर द्वारा कोण रियासतों पर आक्रमण
  - गैरीबाल्डी की महानता
  - काबूर का मूल्यांकन
  - इटली के एकीकरण का अन्तिम चरण
  - जेनेशिया की प्रगति
  - रोम की प्रगति

इकाई–5 जर्मनी का एकीकरण

- जर्मनी के एकीकरण में साधक तत्व
- संयुक्त जर्मनी के निर्माण में मन्द गति के कारण
- एकीकरण के प्रयास में सहायक तत्व
- बौद्धिक आन्दोलन
- औद्योगिक क्षेत्र में सहयोग
- फ्रान्स की 1848 की क्रान्ति
- जर्मनी का औद्योगिक विकास
- प्रशा का शासक विलियम प्रथम एवं उसके सैनिक सुधार
- जर्मनी के एकीकरण का सूत्रधार–विस्मार्श
- चान्सलर बनने के बाद बिस्मार्क के उदेद्श्य एवं योजना
- एकीकरण की ओर
- प्रथम चरण – डेनमार्क से युद्ध एवं गेस्टाइन समझौता
- द्वितीय चरण–आस्ट्रिया प्रशा युद्ध एवं प्राग की सन्धि
- तृतीय चरण– फको– प्रशियन युद्ध एवं फैकफर्ट की सन्धि

खण्ड–2

इकाई–6 पूर्वी यूरोप में राजनीतिक व राष्ट्रवादी संघर्ष (1856–1878ई0)

- पूर्व की समस्या (1856–1870 ई0)
- मोल्डेवियस व वैलिशिया का एकीकरण
- रूस द्वारा पेरिस का उल्लंघन(1870–111 ई0)
- बाल्कन मं राष्ट्रीयता का विकास

- टर्की की दशा में उत्तरोत्तर गिरावट
- सर्वरूलावाद

पूर्वी समस्या (1870–1870)

- बोस्निया तथा हर्जेगोबिना में विद्रोह
- बुल्गारिया में बिद्रोह
- यूरोप के देशों की प्रतिक्रिया
- एन्ड्रेसी नोट
- बर्लिन मेमोरेण्डम
- कुस्तुन्तुनिया सम्मेलन

रूस टर्की युद्ध सैनस्टीफेनो की संन्धि

- सैनस्टीफेनो संन्धि की समालोचना
  बर्लिन कांग्रेस (सन्–1878 ई0)
- बर्लिन काग्रेस की आलोचना
  सन् 1878 ई0 के बाद बाल्कन की घटनाएँ

इकाई–7 ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रान्स के संवैधानिक सुधारो और समाजवादी

आन्दोलनो का तुलनात्मक अध्ययन

ग्रेट ब्रिटेन में संवैधानिक सुधारो का युग

- 1800 ई0 के आस पास ग्रेट ब्रिटेन में लोकतंत्र
- 19वी सदी के आरम्भ में ग्रेट ब्रिटेन में अलोकतंत्रीय व्यवस्थाएँ सुधारों के लिए संघर्ष
  1832 ई0 का संवैधानिक सुधार
- निर्वाचन क्षेत्रों से संबन्धित धाराएँ
- मताधिकार सम्बन्धी धाराएँ
- सुधार अधिनियम का महत्व

चार्टिस्ट आन्दोलन

- चार्टिस्ट आन्दोलन से तात्पर्य
- चार्टिस्ट आन्दोलन के कारण
- आन्दोलन का आरंभ
- मताधिकार की पात्रता
- आन्दोलन की असफलता के कारण
- 1867 का सुधार अधिनियम
- 1867 के सुधार अधिनियम की कमियॉ
- सुधार अधिनियम की समीक्षा
- ग्लैडस्टेन का मंत्रीकाल तथा सुधारों की कमियॉ
- सुधार अधिनियम की समीक्षा

ग्लैडस्टेन का मंत्रीकाल तथा सुधारों का युग

- गुप्त मतदान विधेयक

- 1884 संवैधानिक सुधार अधिनियम
- मताधिकार की पात्रता
- सुधार अधिनियम की समीक्षा

1911 के संवैधानिक सुधार

- 1911 के संवैधानिक सुधार अधिनियम की धाराएँ
- अधिनियम की समीक्षा
- 1833 के फैक्टरी अधिनियम की धारएँ
- अधिनियम का महत्व
  इंग्लैण्ड में श्रमिको के हित में सुधरो का युग प्रारम्भ
- नव उदारवाद इग्लैण्ड में केबियनवाद व श्रमिकों के लिए सुधार
- फेवियनवाद की विशेषतएँ
- उग्रश्रमसंघवाद का प्रबल होना

मजदूर दल का गठन

बीसवी सदी के प्रारम्भ में इग्लैण्ड में श्रमिक सुधार, स्त्री मताधिकार बूबे वंश पुनर्स्थापना

- लुई 18वे द्वारा सवैधानिक घोषणा पत्र
- राजा
- संसद
- प्रतिनिधि सभा
- धर्म
- मौलिक अधिकार
- उदारवाद का पुनः आरम्भ तथा निर्वाचन सुधार
- देकाजे के नेतृत्व में चुनाव सम्बन्धी सुधार
- चार्ल्स दशम तथा प्रतिनिधि सभा
- फ्रांस में संसदीय सरकार की पुनरावृत्ति
- लुई फिलिप के संवैधानिक सुधार
- सामन्तों की सभा को उच्चाधिकारियों की सभा में बदलना
- प्रतिनिधि सभा
- मताधिकार को व्यापक बनाना
- फ्रान्स में समाजवाद का उदय
- सामाजवाद के विकास के कारण
- सामाजवाद के प्रवर्तक सेंट साइमन
- चार्ल्स फाउरिए
- लई ब्लां
- द्वितीय गणतन्त्र
- अस्थाई सरकार के कार्य
- नवीन संविधान
- 1852 का नवीन संविधान
- संवैधानिक परिवर्तन

- द्वितीय साम्राज्य
- नेपोलियन तृतीय के सुधार
- तृतीय गणतन्त्र
- तृतीय गणतन्त्र का संविधान राष्ट्रपति
- मन्त्रिमण्डल
- संसद
- सिनेट
- प्रतिनिधि सभा
- राष्ट्रीय सभा
- जर्मनी में संवैधानिक सरकार की स्थापना के प्रयास
- निर्बल संसद व्यवस्था
- जर्मनी में राष्ट्रवाद का उदय
- कार्ल्सबाड के आदेश
- जर्मनी में बौद्विक क्रान्ति तथा राष्ट्रीयता और उदारवाद का विकास
- फ्रेंकफर्ट संसद का अधिवेशन
- फ्रेंकफर्ट संसद की असफलता
- असफलता के कारण
- एफर्ट का अधिवेशन
- फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ द्वारा दूसरा संविधान स्वीकृत करना
- राष्ट्रीय उदारवाद का जन्म
- विलियम प्रथम का गद्दी पर बैठना तथा विस्मार्क का शक्ति में आना
- बिस्मार्क के राजनीतिक विचार
- जर्मनी का एकीकरण तथा नवीन संविधान
- सम्राट
- संसद
- साम्राज्य परिषद्
- लोक सभा
- जर्मनी में समाजवादी अन्दोलन तथा श्रमिक सुधार
- आन्दोलन के प्रबल होने के कारण
- विस्मार्क व समाजवादियों में संर्घष के कारण
- समाजवादी दल का दमन
- राज्य समाजवाद
- श्रमिको के लिए जीवन बीमा कानून
- 1890 के उपरान्त जर्मनी का संवैधानिक विकास

इकाई–8 1815 में रूस

- रूस का पिछडापन
- रूस के पिछडेपन के कारण

रूस के भूतकाल की विरासत

- निरंकुशता
- अभिजात वर्ग

- अर्द्धदास प्रथा (जिसे कृषि दास प्रथा भी कहा जाता है)
- दास प्रथा, अर्द्ध दास प्रथा और कृषक समाज
- 1815 में अर्द्धदास प्रथा की स्थिति
- नई परम्परा राजनैतिक विचार व आर्थिक विकास
- रूस का आर्थिक जीवन

एलेक्जेण्डर प्रथम (1801से 1825) का शासनकाल

- कृषिदासों की दशा सुधारने का प्रयास
- फिनलैण्ड का स्वायत शासन
- पोलैण्ड का स्वायत शासन

निकोलस प्रथम (1825से1855) का शासन काल

- दिसम्बर विद्रोह के कारण
- दिसम्बर विद्रोह की विफलता
- निकोलस का चरित्र
- निकोलस पद्धति
- क्रीमिया का युद्ध और उसके परिणाम

एलैकजेन्डर द्वितीय(1855 से 1881)

- कृषिदासों की स्वतंत्रता
- अर्द्धदास प्रथा पर स्वमियों का अधिकार
- अर्द्धदास प्रथा का विरोध
- अर्द्धदास प्रथा समाप्त करने का कानून
- मुक्ति कानून की मुख्य धाराएँ
- भूमि का विभाजन
- भीर पद्धति

इकाई–9 यूरोप में नवीन शासन–तन्त्र

- जनसंख्या में तेजी से वृद्धि
- औद्योगिक विकास
- नगरीकरण
- मध्यम वर्ग का शिक्षित व शक्तिशाली होना
- यूरोप में तीब्र होता राष्ट्रवाद
- उदारवाद व समाजवाद का विकास
- राजनीतिज्ञों का आविर्भाव
- अन्य शक्तियॉ

खण्ड–3 राष्ट्रवाद पूँजीवाद एवं समाजवाद

इकाई–10 यूरोप में समाजिक विचारधारा और संस्कृतिक (1815–1917)

- स्वच्छन्दवाद
- आदर्शवाद
- स्वच्छन्दवादी साहित्य
- कला में स्वच्छन्दवादी भाव
- 1870 से 1917 तक सामाजिक विचारधारा और संस्कृति
- 1870 से 1917 के बीच प्रचलित सामाजिक चिन्तन और संस्कृति को सामान्य स्वरूप

- मोह भंग का दर्शन
- यथार्थवादी साहित्य
- प्रभाववादी और आधुनिक चित्रकला एवं मूर्तिकला
- क्रियात्मक वास्तुकला
- संगीत

इकाई–11 संधियों और समझौतों की पद्धति महाद्वीपीय उच्चता की राजनीति

(18781–1890)

- संधियों और समझौतों की पद्धति
- प्रथम चरण में संधि स्थापना तीन सम्राटों का गट 1873
- युद्ध का भय 1875
- बर्लिन सम्मेलन
- आस्ट्रिया के साथ मैत्री संधि की पृष्ठभूमि
- संधि का मूल्यांकन
- त्रिगुट की स्थापना 1882
- रूस के साथ पुनरावासन संधि 1887
- विस्मार्क का पतन

इकाई–12 महान शक्तियों में विश्व सर्वोच्चता के लिए प्रतिस्पर्धा साम्राज्यवाद के विभिन्न चरण तथा उसका बदलता स्वरूप

- पुरातन साम्राज्यवाद
- शिथिल साम्राज्यवाद
- नवीन साम्राज्यवाद
- नवीन साम्राज्यवाद के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिज्ञों के विचार
- प्रतिस्पर्धा के प्रेरक–तत्व

(अ) आर्थिक

- अतिरिक्त उत्पादन
- अतिरिक्त पूँजी
- खाद्यान्नों की कमी
- यातायात के साधनों का विकास
- जनसंख्या में वृद्धि

(ब) राजनीतिक

- उग्र राष्ट्रवाद
- राष्ट्रीय प्रतिष्ठा
- कुछ शासको व सेनानायकों की उपनिवेशवादक के लिए प्रेरणा

(स) अन्य

- महत्वाकांक्षी पुरूषों व अन्वेषको का योगदान
- ईसाई धर्म प्रचारको का योगदान
- यूरोप के साम्राज्यवादी देशो द्वारा असभ्य लोगो को सभ्य बनने का बहाना लना

प्रतिस्र्धा के क्षेत्र

- जनसंख्या का क्षेत्र
- औद्योगिक क्षेत्र
- प्रथम काल (1815 से 1870 ई0 तक
- दूसरा काल (1871 से 1917 ई0 तक
- राजनयिक क्षेत्र
- प्रथम काल (1815 से 1870 ई0 तक
- दूसरा काल (1871 से 1914 ई0 तक
- मोरक्को संकट
- सैनिकवाद
- आंग्ल–जर्मन नाविक प्रतिस्पर्धा
- औपनिवेशिक क्षेत्र

(अ) अफ्रीका का बटवारा
(ब) प्रशान्त महासागर
(स) रूस का बिस्तार
(द) चीन में लूट

इकाई–13 सुदूर पूर्व में जापान का उत्थान जापान का पश्चिम से व्यापक सम्पर्क
शपथ पत्र
महत्ता
आधुनिकी करण का कारण

- शिक्षा
- अर्थव्यवस्था
- सेना का आधुनिकीकरण
  शक्तिशाली जापान द्वारा सैनिक साम्राज्यवादी प्रवृत्तयों का प्रकटीकरण कोरिया
- शिमोनोसकी की सन्धि
- परिणाम
- त्रिपक्षीय हस्तक्षेप
  रूस जापन युद्ध 1904–1905
- कोरिया में रूस और जापान
- मंचूरिया में रूस जापान के स्वार्थ
- पोर्टस माउथ की सन्धि
- परिणाम
- आग्ल–जापानी समझौता
  जापानी साम्राज्यवाद तथा प्रथम विश्वयुद्ध
  साम्राज्यवाद प्रसार के कारण
  फारमोसाा पर प्रभुत्व
  कोरिया पर प्रभुत्व
  मंचूरिया में जापान
  इक्कीस मॉगे

इकाई–14 साम्राज्यवाद–चीनी और भारतीय साम्राज्यवाद का अध्ययन उसका स्वभाव विकास

साम्राज्यवाद का अर्थ

उपनिवेशवाद द्वारा साम्राज्यवाद की उत्पत्ति

उपनिवेशावाद की प्रगति के कारण

- औद्योगिक क्रान्ति
- आर्थिक बिनियोग
- सैन्य आवश्यकताएँ
- ईसाई धर्म का प्रचार
- राष्ट्रीय गौरव या सम्मान
  चीन में साम्राज्यवाद उसकी प्रकृति विकास एवं पतन
- चीन में साम्राज्यवाद की प्रकृति
- चीन में साम्राज्वाद का विकास
- चीन में साम्राज्यवाद का पतन
  भारत में साम्राज्यवाद उसकी प्रकृति विकास एवं पतन
- भारत में साम्राज्यवाद का विकास
- भारत में साम्राज्यवाद का पतन
  चीन और भारत में साम्राज्यवाद समानताएँ तथा असमान्ताएँ साम्राज्यवाद प्रभाव आधुनिकीकरण, आर्थिक शोषण, जातीय मतभेद, अन्तर्राष्ट्रीय कलह प्रथम महा युद्ध का प्रारम्भ

इकाई–15 साम्राज्यवाद : मिस्त्र, दक्षिण अफ्रीका तथा मोरक्को के सन्दर्भ में अफ्रीका में साम्राज्यवाद

मिस्त्र में ब्रिटिश साम्राज्वाद व राष्ट्रीय चेतना

अफ्रीका का विभाजन

खण्ड–4 राष्ट्रवाद, पूँजीवाद एवं समाजवाद–4

इकाई–16 बाल्कन में उथल–पुथल व उत्तेजना (बाल्कन युद्ध) 1878–1914

बाल्कन क्षेत्र पूर्वी समस्या एवं बाल्कन राज्य, बार्लिन कांग्रेस एवं बाल्कन

संकट, बाल्कन बिद्रोह, रूस व आस्ट्रिया की प्रतिक्रिया, रूस टर्की संघर्ष, सेनस्टीफेनो का संधि, यूरोपीय राज्यों में संधि की प्रतिक्रिया, बार्लिन सम्मेलन, समीक्षा प्रथम बाल्कन युद्ध के कारण, बाल्कन संघ का गठन, युवा

तुर्क आन्दोलन, यूरोप में राष्ट्रीय भावनाओं

- टर्की सुल्तान के अत्याचार व प्रशासनिक भ्रष्टाचार
- आस्ट्रिया द्वारा बोस्निया व गोविना पर अधिकार
- रूस का कूटनीतिक सहयोग
- इटली का ट्रिपोली पर अधिकार
- मेसीडोनिया में सुधारो की मॉग, लन्दन सन्धि
- द्वितीय बाल्कन युद्ध कारण
- लन्दन सन्धि, अल्बानिया का निर्माण, बुल्गेरिया का अहंकार, आस्ट्रिया द्वारा सर्वया का विरोध, मेसोडोलिया का प्रश्न
  घटना
  बुखारेस्ट की सन्धि
  सन्धि समीक्षा
  परिणाम

- अपार धन–जन की हानि, तुर्की साम्राज्य का पतन, सर्बिया का शक्तिशाली होना , रूस की यूरोप में सक्रियता, सर्विया व आस्ट्रिया की शत्रुता, बाल्कन संघ का विघटन, बुल्गरिया में बदलने की भावना सैनिकवाद का प्रबल होना, बाल्कन क्षेत्र के इसाइयों को राहत, प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार होना।

इकाई–17 चर्च और राज्य के सम्बन्ध

- चर्च का विकास
- प्रारम्भिक ईसाई रोमन साम्राज्य में चर्च और सम्राट के सम्बन्ध
- प्रारम्भिक मध्य युग में सम्राट व चर्च के सम्बन्ध
- सामन्ती युग में सम्राट व चर्च के सम्बन्ध
- चर्च व उत्तर मध्यकालीन राजतंत्र
- चर्च और राज्य के सम्बन्ध निरंकुशवादी काल में
- चर्च और उदार राज्य 1801 की धर्म सन्धि कांग्रेस आफ वियना के पश्चात् राज्य और चर्च के सम्बन्ध पोप और इटली के सम्बन्ध जर्मनी में सभ्यता का सम्बन्ध आधुनिक युग में चर्च व राज्यों के सम्बन्ध

इकाई–18 टर्की में समाज सुधार व युवातुर्क आन्दोलन

- टर्की में सुधार योजना
- युवतुर्क आन्दोलन जुलाई1908
- आन्दोलन के उददे्श्य
- घटनाक्रम
- युवा तुर्को की समस्याएँ
- युवा तुर्क सुधार कार्य
- युवा तुर्क आन्दोलन एवं विश्व
- युवा तुर्क आन्दोलन की असफलता के कारण
- तुर्कीकरण के नीति का प्रभाव
- आन्दोलन के बाद तुर्की

इकाई–19 अमेरिका की खोज वहॉ के मूल निवासी तथा वहॉ ज कर बसने वाले लागे

- आरम्भिक यूरोपवासियों के उद्े्श्य
- काले लोगों को दास बनाकर अमेरिका ले जाने के उद्े्श्य
- काले लोगों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति 1830 तक
- काले लोगों की दास्ता से मुक्त कराने का प्रयास
- अब्राहम लिंकन का निर्वासन, दास समर्थक राज्यों का संघ से अलग होना
- अमेरिका का गृह युद्ध, दास प्रथा का अन्त

खण्ड–5

इकाई–20 राष्ट्रवाद पूॅजीवाद एवं समाजवाद–5

प्रथम विश्व युद्ध के कारण व उसकी पृष्ठभूमि

- दूरगामी कारण
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था

- तत्कालीन कारण सराजवों का हत्याकाण्ड

इकाई–21 रूसी क्रान्ति की बौद्धिक नीव

- बोल्सेविक युरोपिया
- ऐतिहासिक रूपरेखा
- 1848 एवं रूस
- रूसी नरोदानिक (पापुलिस्ट)
- बुद्धिवाद तथा बुद्धिजीवियों की उत्पत्ति तथा रूपरेखा
- बुद्धिजीवी संविदा तथा सिद्धान्त

इकाई–22 रूसी क्रान्ति एवं इसका प्रभाव

- क्रान्ति के लिए उत्तरदायी परिस्थतियॉ
- क्रान्ति का सूत्रपात
- ब्रेस्टालियोवस्क की संन्धि एवं रूस का युद्ध से अलग होना
- बोल्शविक शासन के विरोध
- नवीन सरकार का विरोध
- क्रान्ति का महत्व

इकाई–23 लेनिन : आन्तरिक तथा विदेशी नीति

- लेनिन आन्तरिक तथा परराष्ट्र नीति
- न्यू एकोनोमिक पालिसी (नवीन आर्थिक नीति)

खण्ड–6 युद्ध एवं औद्योगिक समाज (1917–1945)

इकाई–24 1918–1919 रूपान्तर और पेरिस समझौता

- पेरिस शान्ति सम्मेलन
- वर्साय की सन्धि
- अन्य लघु सन्धियॉ
- पेरिस शान्ति सम्मेलन का सारांश

इकाई–25 सामूहिक सुरक्षा और निःशस्त्रीकरण

- जेनेवा विज्ञप्ति
- विज्ञप्ति का मूल्यांकन
- लोकानो समझौता
- समझौते का मूल्यांकन
- समझौते का परिणाम
- पेरिस का समझौता
- समझौते की व्यवस्थाएँ
- समझौते की आलोचना
- सामूहिक सुरक्षा प्रयासो की विफलता

इकाई–26 फ्रांस द्वारा सुरक्षा की खोज

- भोगोलिक सुरक्षा की मॉग

- राष्ट्र संघ के बाहर प्रयास
- फ्रांस द्वारा लघु राष्ट्रों से समझौता
- राष्ट्रसंघ के अर्न्तगत सुरक्षा प्रयास
- निःशस्त्रीकरण

इकाई–26 आर्थिक थकान–क्षतिपूर्ति की समस्या

- क्षतिपूर्ति का अर्थ
- समस्या का स्वरूप
- समस्या का प्रथम चरण (जनवरी 1921 अप्रैल 1921)
- समस्या के द्वितीय चरण (मई 1921–29)
- क्षतिपूर्ति समस्या का अन्तिम चरण (1930–32)
- क्षतिपूर्ति समस्या की समीक्षा

इकाई–27 राष्ट्रसंघ और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व्यवस्था का उत्थान एवं पतन

- राष्ट्रसंघ की स्थापना
- राष्ट्रसंघ का संविधान
- राष्ट्रसंघ की सदस्यता
- राष्ट्रसंघ के मॉग
- राष्ट्रसंघ के कार्य
- राष्ट्रसंघ की असफलता के कारण
- राष्ट्रसंघ का मूल्यांकन

खण्ड–7 युद्ध और औद्योगिक समाज(1917–1945)–2

इकाई–28 लोकानो एवं पेरिस समझौता

- लोकानो समझौता
- समझौते की धाराएँ
- समझौते की समालोचना
- पेरिस समझौता
- पेरिस समझौता और राष्ट्र संघ
- परिस समझौता की समलोचना
- समझौता की प्रतिक्रिया

इकाई–29 वाशिंगटन सम्मेलन

- शान्ति को बचाने का प्रयास
- सम्मेंलन के लिए जिम्मेदार तत्व
- सम्मेलन की कार्यवाही
- सम्मेलन का मूल्यांकन

इकाई–30 नवीन टर्की का जन्म–मुस्तफा कमालपाशा

- लोसान की संन्धि
- कमालपाशा का आरम्भिक जीवन

- टर्की गणराज्य की घोषणा
- कमालपाशा के विचार एवं सुधार
- गणतंत्रवाद
- राष्ट्रवाद
- अन्यसुधार
- आर्थिक सुधार

इकाई–31 नव–गणतन्त्र वाईमर गणतन्त्र

- जर्मन गणतन्त्र
- वाईमर संविधान निर्माण
- वाईमर गणतन्त्र की कठिनाइयॉ(1919–33)
- फ्रान्स का प्रदेश पर कब्जा
- आर्थिक कठिनाइयॉ
- डावेस योजना
- वाइमर गणतन्त्र
- वाईमर गणतन्त्र की विदेशनीति
- वाईमर गणतन्त्र के पतन के कारण

इकाई–32 समाजवाद का सिद्धान्त मार्क्स लेनिन एवं माओत्सेतंग

- सर्वहारा क्रान्ति का मार्क्सवादी सिद्धान्त
- द्वन्द्वात्मक भौतिवाद का मार्क्सवादी सिद्धान्त
- आर्थिक निर्धारणवाद का मार्क्सवादी सिद्धान्त
- वर्ग संघर्ष का मार्क्सवादी सिद्धान्त और सर्वाहारा वर्ग का तानाशाही
- मार्क्स का राज्यवादी सिद्धान्त
- बिलगॉव का मार्क्सवादी सिद्धान्त
- द्वन्द्वात्मक भौतिवाद का लेनिनवादी सिद्धान्त
- अतिरिक्त मूल्य का मार्क्सवादी सिद्धान्त
- लेनिन की पार्टी का सिद्धान्त
- लेनिन का सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति सिद्धान्त
- साम्राज्यवादी पूॅजीवाद का लेनिनवादी सिद्धान्त
- लेनिन और नई आर्थिक नीति
- माओत्सेतुंग का एशियाई साम्यवादी सिद्धान्त
- माओत्सेतुंग और कृषक वर्ग
- माओत्सेतुंग्की गोरिल्ला युद्ध
- माओत्सेतुंग का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धान्त
- माओत्सेतुंग और सांस्कृतिक क्रान्ति

खण्ड–8 युद्ध और औद्योगिक समाज (1917–1945)–3

इकाई–33 सोवियत संघ का नवीन संविधान

- संविधान निर्माण प्रक्रिया
- न्यायपालिका
- लोकतांन्त्रिक केन्द्रीकरण

- एकदलीय व्यवस्था

इकाई–34 लेनिन की नई आर्थिक नीति

- वाहाहस्तक्षेप और गृहयुद्ध
- उद्योग का राष्ट्रीयकरण
- वस्तु अधिग्रहण कानून
- जमीदारों के भय से मुक्ति
- खाद्यान्न अधिग्रहण
- लघु उद्योग को स्वतन्त्रता
- स्थाई मुद्रा एवं मुद्रा नियंत्रण
- श्रमिको की दशा सुधारने हेतु प्रयास

इकाई–35 नवीन आर्थिक विचार केच के सिद्धान्त

- जीवन परिचय व पृष्ठभूमि
- आर्थिक विचारधारा में केचीयन स्थान
- आर्थिक नीति की केचियन व्यवस्था में नीति मान्यताएँ
- केचीयन आर्थिक व्यवस्था की सामान्य विशेषताएँ
- केचीयन प्रणाली की विस्तृत व्याख्या–प्रवृत्तयॉ एवं नियत्रण
- केच के आर्थिक विचारो की आलोचना
- केंच के विचारो का मूल्यांकन
- केंच और अर्द्ध विकसित अर्थव्यवस्था

इकाई–36 विश्वव्यपार का संकुचन एवं 1929–31 में गिरावट

- व्यापार संकुचन के कारण
- 1929 का आकस्मिक संकट
- आर्थिक मन्दी के कारण
- आर्थिक मन्दी का विस्तार
- आर्थिक मन्दी के प्रभाव

इकाई–37 गॉधी दर्शन एवं अहिंसात्मक आन्दोलन

- गॉधी दर्शन की विशेषताएँ
- दक्षिण अफीका में सत्याग्रह
- गॉधी जी का भारत आगमन चम्पारण आन्दोलन
- असहयोग आन्दोलन
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन
- गॉधी इरविन समझौता
- भारत छोडो आन्दोलन

खण्ड–9 युद्ध एवं औद्योगिक समाज (1917–1645)

इकाई–38 सामाजिक असन्तोष और मजदूर विद्रोह

- मजदूर वर्ग की राजनीति
- पूँजीवादी देशों में आर्थिक संकट

- फासिस्ट राज्यों का उदय और मजदूर आन्दोलन
- मजदूरों के प्रति राज्य का दृष्टिकोण
- मजदूरों का मुख्य उददे्श्य
- राष्ट्रीय आन्दोलन और मजदूर

इकाई–39 संयुक्तराज्य अमेरिका की अर्थव्यवस्था की सफलता व असफलता रूजवेल्ट की नीति

- राष्ट्रपति रूजवेल्ट का परिचय
- 20वी शताव्दी के तीसरे दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थिति
- आर्थिक मन्दी व उसके प्रभाव
- न्यूडील योजना
- 1936 का चुनाव
- पुनरूत्थान के गिरावट
- न्यूडील योजना के गुण–दोष
- न्यूडील योजना की समीक्षा

इकाई–40 चतुर्थ विश्व की अर्थव्यवस्था सुदूरपूर्व में जापान का उत्कर्ष

- जापानी आर्थिक विकास के विभिन्न चरण
- जापान की अर्थव्यवस्था (1919–30)
- जापान की अर्थव्यवस्था (1930–36)
- जापान की अर्थव्यवस्था (1936–45)

इकाई–41 इण्टरनेशनल कामिण्टर्न पैक्ट तथा सोवियत नीति

- कामिण्टर्न का (अ) अस्तित्व (आ) संरचना
- कामिण्टर्न की प्रकृति एवं उदय
- कामिण्टर्न की नीतियॉ
- कामिण्टर्न का अन्त

इकाई–42 फासिस्ट राज्य

- मुसोलिनी पश्चिम
- फासिस्ट राज्य का स्वरूप
- फासिस्ट दल
- व्यक्ति और समाज
- शक्ति विरोधी युद्ध समर्थक
- नात्सीवाद
- नात्सी राज्य
- नात्सी दल
- जर्मन आर्य जाति
- अर्थव्यवस्था का केन्द्रीकरण

खण्ड–10 युद्ध एवं औद्योगिक समाज (1917–1945) 5

इकाई–43 विश्व रानीति में नारियों के उददे्श्यों

- प्रथम महायुद्ध के पश्चात् जर्मनी का परिदृश्य

- नाजीवाद : दर्शन एवं विचारधारा
- नाजीवाद के उत्कर्ष के कारण

इकाई–44 अर्थ शान्ति आस्ट्रिया का अन्त

- हिटलर का उत्कर्ष और सुरक्षा व्यवस्था
- हिटलर की विस्तारवादी नीति
- विस्तावादी नीति के प्रमुख कार्य
- जर्मन भाषा–भाषी प्रदेशो का जर्मनी में विलय
- आस्ट्रिया का जर्मनी में विलय
- आस्ट्रिया पर अधिकार के परिणाम और विदेशी प्रतिक्रियाएँ
- म्युनिख समझौता
- जर्मन आक्रमण के कारण
- म्यूनिख समझौते की प्रमुख विशेषताएँ
- म्यूनिख समझौते के परिणाम
- म्यूनिख समझौते पर विदेशी प्रतिक्रियाएँ

इकाई–45 समझौतों हमलों की घोषण शान्ति का (1939 ई0)

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद मित्रराष्ट्रों एवं पराजित राष्ट्रों के बीच संधियॉ
- वर्साय, जैन्ट जर्मेन, न्यूली ट्रीलों से एवं सोसान की संन्धियॉ
- राष्ट्रसंघ की संरक्षता में की गयी सन्धि
- द्विपक्षीय सन्धियॉ
- ब्रिटेन, ब्रिटिश , इराकी सन्धियॉ, 1922 ब्रिटिश –टर्की सन्धि 1925, ब्रिटिश– इराकी सन्धि 1930, आग्ल सन्धि 1936, आग्ल –इटली समझौता 1938
- इटली
- रूस
- टर्की
- पोलैण्ड
- चेकोस्लोवाकिया
- जापान
- जर्मनी
- निःशस्त्रीकरण
- शान्ति का विनाश

इकाई–46 अफ्रीका संकट–अबीसीनिया का युद्ध

- अबीसीनिया का युद्ध
- इटली की विदेश नीति
- अबीसीनिया द्वारा राष्ट्रसंघ की सदस्यता ग्रहण करना
- अबीसीनिया पर आक्रमण के कारण
- समस्या का समाधान
- अबीसीनिया पर इटली आक्रमण की प्रमुख घटनाएँ
- राष्ट्रसंघ की असमर्थता
- अबीसीनिया युद्ध के परिणाम

- द्वितीय विश्व युद्ध एवं अबीसीनिया का प्रश्न
- स्पेन का युद्ध औरिटली का रूख
- हिटलर की यूरोप में दादागीरी
- द्वितीय विश्व युद्ध की प्रगति
- शान्ति स्थापना के प्रयत्न–इटली के साथ सन्धि

इकाई–47 स्पेन का गुहयुद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि में महान युद्ध नीतियॉ

- भौगौलिक कारण
- सामाजिक कारण
- आर्थिक कारण
- राजनीतिक कारण
- सैनिक कारण
- महान युद्ध नीतियॉ (विदेशी हस्तक्षेप)

खण्ड–11 युद्ध एवं औद्योगिक समाज (1917–1947) 6

इकाई–48 युद्ध एवं औद्योगिक समाज (1919–1947)

- असहयोग आन्दोलन 1920
- राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप 1922–1937
- 1937 से 1947 तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप

इकाई–49 ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल

- राष्ट्र मण्डल का अर्थ एवं स्वरूप
- राष्ट्र मण्डल के संगठन एवं संस्थाएँ
- राष्ट्र मण्डल के उददे्श्य
- राष्ट्र मण्डल का ऐतिहासिक विकास
- प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् राष्ट्र मण्डल का विकास
- राष्ट्र मण्डल की विशेषताएँ

इकाई–10 सुदूरपूर्व में संकट–मंचूरिया संकट

- चीन में प्राचीन राजवंश

MAHY-03
इतिहास दर्शन एवं लेखन
प्रथम खण्ड

इकाई–1 ऐतिहासिक चिन्तन

- इतिहास एवं प्रकृति
- इतिहास एवं समाज
- राजनीतिक इतिहास
- संवैधानिक इतिहास
- आर्थिक इतिहास
- सामाजिक इतिहास
- सांस्कृतिक इतिहास
- राजनयिक इतिहास
- सांस्कृतिक इतिहास
- धार्मिक इतिहास
- औपनिवेशिक इतिहास
- संसदीय इतिहास
- सैनिक इतिहास
- कामनवेल्थ का इतिहास
- विचारों का इतिहास
- इतिहास दर्शन
- मानव स्वतंत्रता तथा मानव प्रगति का इतिहास
- प्रगति का इतिहास
- विश्व इतिहास

इकाई–2 इतिहास प्रगति के समरूप

प्रगति की परिभाषा

मानव इतिहास की संरचना

- इतिहास और मानव संकल्प
- मानवीय समाज के विभिन्न आयाम
  ऐतिहासिक प्रगति के निर्णायक तत्व
- मार्क्स की प्रगति की नियतिवादी व्याख्या
- इतिहास निर्माता का आत्मबोध और मानसिकता
  संक्रान्ति के वस्तुनिष्ट एवं वैयक्तिक कारक
- ऐतिहासिक के वास्तुनिष्ठ आदर्श और इतिहास के नायको की अभिलाषा क्या सम्पूर्ण मानव जाति के विकास का कोई सुस्पष्ट प्रारूप है।
- समकालीन सार्वभौम इतिहास में अराजक विशिष्टों की समस्या जातीय नानत्व एवं विशिष्ट परम्पराएँ।
- क्या सम्पूर्ण मानवीय इतिहास किसी केन्द्रीय लक्ष्य को प्राप्त कर रहा है।
- नाना जातीय सांस्कृतिक परम्पराएँ अन्यान्य विशिष्ट मूल्य परिप्रेक्ष्य व्यक्त करती है।

इकाई–3 इतिहास, विज्ञान और नैतिकता

इतिहास क्या है?

- इतिहास के स्रोत और साधन
- इतिहास वार्ता में व्यक्तित्व का सवाल
- इतिहास और नियतिवाद
- इतिहास वृतांत और इतिहासकार की परिकल्पनाएँ
- इतिहासकार के मूल्यांकन और मानव मूल्य
  विज्ञान नीति भावोंन्मेष
- विज्ञान और समाज विज्ञान
- विज्ञान का इतिहास और समाज विज्ञान
  नैतिकता
- नैतिक मूल्यों की सापेक्षता का इतिहास
  नैतिकता विज्ञान और इतिहास
- मानवीय अस्तित्व एवं मूल्य
- सर्वकालिक आधार मूल्य
  इतिहास की सीख एवं निष्कर्ष

इकाई–4 इतिहास और सामाजिक विज्ञान

19वी सदी में इतिहास एवं सामाजिक विज्ञान

- हेगेल
- रांके
- कार्ल मार्क्स
- डाकवर्न तथा अन्य वैज्ञानिक
- डिल्थे
- वेबर
  20वी सदी के पूर्वार्द्ध इतिहास और सामाजिक विज्ञान
- ऐक्टन
- क्रोचे और कालिंगवुड
- ओसवाल्ड स्पेंगलर और आरनान्ड टायनबी
- ई0एच0 कार
  20वी सदी के उतरार्द्ध मे इतिहास और समाजिक विज्ञान इतिहास पर
  सामाजिक विज्ञान का प्रभाव
- समाजशास्त्र और मानव विज्ञान
- मनोविज्ञान
- अर्थशास्त्र
- राजनीतिशास्त्र
- भूगोल

द्वितीय खण्ड

इकाई–5 चीनी इतिहास खन का भूमिका और उसका स्वरूप

- इतिहास लेखन परम्परा की उत्पत्ति
- कनफ्यूसियसवाद और इतिहास लेखन

- विवरणात्मक इतिहास लेखन का विकास
- वृहद इतिहास लेखन परम्परा का प्रादुर्भाव एवं विकास
- पान कू (32–12 ई0 पूर्व)
  अधिकारिक इतिहास लेखन का विकास
  विश्लेषणात्मक व आवलोचनात्मक इतिहास लेखन
  चीनी इतिहास लेखन परम्परा की विशेषताएँ

इकाई–6 अरबी एवं इस्लामी इतिहास लेखन की परम्पराएँ

इतिहास के सम्बन्ध मे मुस्लिम विचार
इस्लाम के उदय के पूर्व अरब में एतिहासिक चेतना

- वंशावलियॉ
- शिलालेख

यहूदियों और इसाइयों की भूमिका

इस्लाम में एतिहासिक चेतना का विकास

मुस्लिम इतिहास लेखन की भूमिका आधारभूति पद्धतियॉ

- खबर इतिहास
- काल कलात्मक इतिहास लेखन
- राजवंश सम्बन्धी इतिहास लेखन
- वंशवली सम्बन्धी पद्धति
- तबक्षात पद्धति (वर्गीकृति चरित्र चित्रण)
  खलीफाओं के समय का चरित्र लेखन
  अब्बासी खलीफाओं के काल में इतिहास लेखन
  ईरान का संस्कृति उत्थान और इतिहास लेखन
  मंगोल आक्रमण और इतिहास लेखन
  भारत में मुस्लिम इतिहास लेखन
  अन्दलूसी और मगरिकी इतिहास लेखन
  टूब्र सल्टून के पश्चात् इतिहास लेखन

इकाई–7 ईसाई धर्म एवं इतिहास लेखन

इसाई इतिहास दर्शन की निर्धारक ईसाई धार्मिक मान्यताएँ

ईसाई इतिहास चिन्तन

ईसाई इतिहास दर्शन की प्रमुख अवधारणाएँ

ईसाई इतिहास दर्शन का परवर्ती इतिहास दर्शन पर प्रभाव

इकाई–8 इतिहास दर्शन की निश्चयात्मक अभिगम–रॉके के विशेष सन्दर्भ में

इतिहास दर्शन की धाराएँ : (1) आध्यात्मवादी एवं भौतिकवादी

इतिहास का विकासवादी सिद्धान्त

वैज्ञानिक इतिहास लेखन की तलाश

ऐतिहासिक भौतिकवादी

समाज का सम्पूर्ण दर्शन

सामाजिक परिर्वतन की शक्तियॉ एवं प्रक्रियॉ

वर्ग और वर्ग संघर्ष

ऐतिहासिक युग

इकाई–10 20वी शताब्दी की इतिहास लेखन : स्पैंगलर एवं टायन्बी के सन्दर्भ

स्पैंगलर के विचार

प्रकृति और इतिहास

- इतिहास में संस्कृतियों का उत्थान एवं पतन
- संस्कृति
- संसकृति की वृत्तत्मकता
- संस्कृति और सभ्यता
- तोलमेक एवं कोपर निकस का दृष्टिकोण
- संस्कृतियों का जीवनकाल

टायन्बी के विचार

- सामाजिक अध्ययन की महत्ता
- सभ्यता की समस्याऍ
- सभ्यताओं से सम्पर्क
- सर्पिल सिद्धान्त

स्पैंगलर एवं टायन्बी के विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण
20वी सताब्दी के इतिहास दर्शन की प्रेरक शक्तियॉ

इकाई–11 महाकाव्य कौटिल्य का अर्थशास्त्र धर्मशास्त्र व भास साहित्य की ऐतिहासिक विवेचना

महाकाव्य

रचनाकाल

- रामयण
- महाभारत

महाकाव्यों का कथानक

- रामयण
- महाभारत

महाकाव्यों का महत्व
महाकाव्य : ऐतिहासिक स्रोत के रूप में

- राजनीतिक जीवन
- सामाजिक जीवन
- आर्थिक जीवन
- धार्मिक जीवन

अनुभागीय सारांश
आर्थशास्त्र

- अर्थशास्त्र का कृतित्व
- अर्थशास्त्र विषयक विवाद
- अर्थशास्त्र का प्रभाव

- अर्थशास्त्र की विषयवस्तु
  अर्थशास्त्र ऐतिहासिक स्रोत के रूप में
  धर्मशास्त्र
- धर्म
- धर्मशास्त्रों का पचिय
- धर्मशास्त्र ग्रन्थों का निर्माण काल
  ऐतिहासिक स्त्रोत के रूप में धर्मशास्त्र
  स्मृति ग्रन्थों में वार्णित जीवन
- आर्य संस्कृति का क्षेत्र
- राजनीतिक जीवन
- सामाजिक जीवन
- आर्थिक जीवन
  भास का काल
  भास की रचनाएँ

इकाई–12 कालिदास–साहित्य, पुराण व हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति की ऐतिहासिक विवेचना

कालिदास

- काल निर्णय
- कालिदास की रचनाएँ
- कालिदास की रचनाओं का ऐतिहासिक महत्व
  पुराण
  पुराणों का ऐतिहासिक महत्व
  हरिषेण प्रयाग प्रशास्ति
  प्रयाग प्रशस्ति का ऐतिहासिक महत्व

इकाई–13 फाहियान, युवानच्वांग और ईत्सिंग की भारत यात्रा वृत्तांत

फाहियान

- मध्य एशिया
- अफगानिस्तान और सीमा प्रान्त
- भास में प्रवेश : पंजाब और मथुरा
- मध्यप्रदेश
- पारलिपुत्र
- कठिनाईयॉ
- विभिन्न सम्प्रदाय तथा पूजा पद्धतिया
- प्रशासन
- समाज
  युवान च्यांग

- कन्नौज का राजगद्दी पर बैठना
- राजनैतिक दशा
- विजये और साम्राज्य
- प्रशासन
- कन्नौज का महत्ता

- कन्नौज का सभा
- प्रयाग की सभा
- हर्ष का धर्म
- देश की धार्मिक स्थिति
- विद्या का संरक्षक
- सामाजिक दशा
- आर्थिक दशा
  ई–त्सिंग
- बौद्ध धर्म
- नालन्दा विश्वविद्यालय और शिक्षा पद्धति
- सफाई व्यवस्था
- उत्पादन
- वस्त्र
- राजनैतिक घटनाएँ

इकाई–14 बाबरनामा, अकबरनामा तथा सुजन राय भण्डारी की कृत खुलासतुत्तवशिख

ऐतिहासिक स्रोतों में बाबरनामा, अकबरनामा, तथा खुलासतुत्तवशिख का महत्व

बाबरनामा–बाबर के बौद्धिक जीवन पर अनुवंशिकता तथा वातावरण का प्रभाव, बाबर की उपलब्धियॉ–विद्वता के क्षेत्र में

बाबरनामा

बाबरनामा एक ऐतिहासिक ग्रन्थ के रूप में

अकबरनामा

अबुलफजल की जीवनी, कृतियॉ

खुलासतुत्तवशिख के लेखक सुजन राय

खुलासतुत्तवशिख एक ऐतिहासिक ग्रन्थ के रूप में

इकाई–15 ख्यात साहित्य सामान्य परिचय

विषयवार वर्गीकरण

शैलीगत वर्गीकरण

ख्यात साहित्य की प्राचीनता एवं उसके लेखक

ख्यातों की विषयवस्तु

- राजवंश सम्बन्धी ख्यातों की विषयवस्तु
- शासक विशेष सम्बन्धी ख्यातों की विषयवस्तु
- जाति विशेष सम्बन्धी ख्यातों की विषयवस्तु
  कुछ प्रसिद्ध ख्यातों कारों का सामान्य परिचय
- मृदुत नैजसी
- दयालदारा सिंढायत
- बोकीदास
  बातसाहित्य

बातों का वर्गीकरण

- ऐतिहासिक बातें
  अर्द्ध ऐतिहासिक बातें
  अन्य विषयों की बातें

इकाई–16 गुजराती रासमाला साहित्य का ऐतिहासिक महत्व

- गुजराती रासमाला साहित्य
- रासमाला के आधारभूत साधन स्रोत
- रासमाला में गुजरात–सौराष्ट्र की भौगोलिक सीमा और स्थिति
- रासमाला में वर्णित विभिन्न राजवंश
  सल्तनत कालीन गुजरात और विशिष्ट शासक
  रामाला में वर्णित विशिष्ट घटनाएँ
  गुजरात के उद्योग धंन्धें का व्यापारिक केन्द्र
  गुजरात का राजनैतिक स्वरूप
- प्रशासनिक व्यवस्था
- राजस्व व्यवस्था
  गुजरात में बसने वाली प्रमुख जातियॉ
- शासक जातियॉ
- जनजातियॉ
- अन्य जातियॉ
  गुजरात का संस्कृतिक स्वरूप

इकाई–17 भारतीय इतिहास एवं इतिहास लेखन का यूरोपीय मत

विलियम जोन्स के विचार

धर्मपरायण साम्राज्यवाद और इतिहास लेखन

उपयोगितावादी इतिहासकार जेम्स मिल के विचार

एल्फिंस्टन का मत

भारत के प्रान्तीय इतिहास के कुछ लेखक

1850 के उपरान्त यूरोपीय इतिहासकारों का अध्ययन एवं लेखन

इकाई–18 स्वातन्त्र्य पूर्व राष्ट्रवादी इतिहास लेखन : आर0 सी0 दत्त एवं दादा भाई नौरोजी

स्वातन्त्र्य पूर्व भारत में राष्ट्रवादी इतिहास लेखन

आर0 सी0 दत्ता– उनके विचार

दादा भाई नौरोजी– उनके विचार

राष्ट्र ऋण

भूराजस्व–

उद्योग वाणिज्य तथा कृषि का ह्रास

यातायात के साधन (रेलवे सडक तथा सिचाई) की असंतुलित व्यवस्था

इकाई–19 भारतीय इतिहास लेखन में अधुनातन प्रवित्तिया परम्परावादी सम्प्रदायवादी राष्ट्रवादी तथा मार्क्सवादी

भारतीय इहिास लेखन में अधुनातन प्रवृत्तियॉ

परम्परावादी इतिहास लेखन

सम्प्रदायवादी इतिहास लेखन

मार्क्सवादी इतिहास लेखन

इकाई–20 भारतीय लोक साहित्य का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व

लोक साहित्य की परिभाषा और उसकी विधाएँ

लोक साहित्य और समाज का सांस्कृतिक प्रारूप

लोक साहित्य में वर्णित आदिम विचार

लोक साहित्य का एतिहासिक दृष्टि से मूल्यांकन

इकाई–21 इतिहास में तथ्य

इतिहास में तथ्यों का इतिहास

ऐतिहासिक तथ्य क्या है

- सामान्य तथ्य
- मूलभूत तथ्य
- विशिष्ट तथ्य
  काले बेवर की अवधारणा
  ई0एच0 कार का विवेचना
  तथ्यों के स्रोत
- वैज्ञानिक स्रोत
- अवैज्ञानिक स्रोत
- साहित्यिक स्रोत
  तथ्यों की व्याख्या
  तथ्यों एवं मूल्यांकन
  वस्तुपरकता एवंत तथ्य

इकाई–22 इतिहास में वस्तुनिष्ठता

इतिहास में वस्तुपरकता की अवधारण

इतिहास में वस्तुनिष्ठता

- वस्तुनिष्ठ तथ्यता
- वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण
- वस्तुपरक व्याख्या
- मूल्य एवं उददे्श्य

MAHY-04

भारत में धार्मिक विचारधारा एवं आस्था

(4 अ)

धर्म दर्शन

- धर्म, धर्मशास्त्र और धर्मदर्शन की परिभाषा एवं विषय क्षेत्र
- धार्मिक दर्शन के प्रकार
- धर्म के विकास की अवस्थाएँ
- धार्मिक विश्वास के आधार : आस्था, दैवी, प्रकाशन तर्क और रहस्यानुभूति।
- धार्मिक चेतना
- अनीश्वरवाद एवं द्वैतवाद
- धर्म एवं नैतिकता
- ईश्वर का स्वरूप और ईश्वर के गुण
- प्रकृतिवादी ईश्वर की धारणा
- धार्मिक विकास की परम्परा
- भारतीय धर्म परम्परा
- ईश्वर और धर्म
- धर्म और विज्ञान
- धार्मिक भाषा और विश्लेषणात्मक धर्म दर्शन
- हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म, यहूदी धर्म, पारसी धर्म, कन्फ्यूशियस धर्म, ताओवाद, शिन्तो धर्म

(4 ब)

जैन धर्म की ऐतिहासिक रूपरेखा

- जैन तीर्थंकर
- जैन सम्प्रदाय
- आजीवक मत
- श्रमण संघ और उनकी आचार प्रणाली
- जैन धर्म का प्रचार

MAHY-05
भारतीय पारिस्थतिकी एवं पर्यावरण का इतिहास

(5 अ)

पर्यावरण अध्ययन

- पर्यावरण अध्ययन की बहुविषयी प्रकृति
- प्राकृति संसाधन
- पारिस्थतिक तन्त्र
- जैव विविधता एवं उसका संरक्षण
- पर्यावरण प्रदूषण
- सामाजिक समस्याएँ और पर्यावरण
- मानव जनसंख्या एवं पर्यावरण

(5 ब)

पुरातत्व अनुशीलन

- भारत में लोहे की प्रचीनता
- कृष्ण लोहित पात्र परम्परा
- चित्रित धूसर पात्र परम्परा
- उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र परम्परा
- बृहत् पाषाण समाधि संस्कृति
- भारत तथा रोम का सम्बन्ध
- कतिपय पुरास्थल
- मोहनजोदडों, हडप्पा, लोथल, कालीबंगा, सुरकोटदा, धौलाबीरा, टोकबा, इमली, कौशाम्बी इत्यादि।

MAHY-06
भारत की राजनैतिक संरचना

इकाई–1 प्राचीन भारतीय राज्य एवं शासन पद्धति के अध्ययन स्रोत एवं सामग्री

साहित्यक स्रोत

- ब्राह्माण साहित्य
- बौद्धिक साहित्य
- विदेशी वृत्तान्त
  पुरातात्विक स्रोत
- अभिलेख
- सिक्के

इकाई–2 वैदिक काल में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ

- वैदिक काल की अवधारणा
- वैदिक साहित्य निर्माता क्या विदेशी थे।
  वैदिक राजनीतिक के स्रोत
  राज्य की उत्पत्ति सम्बन्धी विचार
- शासन विधान के प्रकार
- राज्य के उददे्श्य
- राज्य के धर्म निगडित होने की कल्पना
- सर्वोच्च सत्ता का अस्तित्व
  राजस्व पर विचार (राजपद का जन्म)
- राजा ब्राह्मण सम्बन्ध
- राजा के देवदत्त की कल्पना
  राजा का निर्वाचन
- राज्य के अन्य कृत
- राज्य युत और पुनः निर्वाचन
- राजा के कर्तव्य
  राजा पर नियन्त्रण
- समिति
- सभा
- विदथ
  राजपद गौरव का प्रतीक अभिषेक
- राज्याभिषेक से सम्बन्धित राजसूय यज्ञ
- रत्न हवि
- देव वस्तु
- अभिषेक जल संग्रह
- अभिषेचन
- अधिकार ग्रहण घोषणा
- राजपद दान
- अभिषेकेत्तर कृत्त

- अधीनता स्वीकृति
- शासन सूचक क्रीडा
- राजपद प्रतिष्ठा

मन्त्रिमंण्डल का प्रारम्भिक स्वरूप
वैदिक गण का विवेचन
सैन्य व्यवस्था
कर व्यवस्था
न्याय प्रक्रिया
ग्रामों का प्रशासन

इकाइ–3 महाकाव्यों से ज्ञात राजनीतिक विचार एवं प्रशासनिक संस्थाएँ
महाकाव्यों के सम्बन्ध में पश्चिमी इतिहासकारों की अवधारणा
महाकाव्यों के राजनीतिक आदर्श
महाकाव्यों में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ

- राजधर्म एवं दण्डनीति
- राजा की आवश्यकता
- राजा की दैवीय उत्पत्ति का सिद्धान्त
- राज्य उत्पत्ति हेतु सामाजिक अनुबन्ध का सिद्धान्त
- राजा के चुनाव का संकेत
- राजा का आवयाविक स्वरूप
- साम्राज्य की अवधाराणा
- राजा के कर्तव्य
- उत्तराधिकारी के नियम एवं राज्याभिषेक का उल्लेख
- राजा के गुण दोष
- धर्म और राजनीति का सम्बन्ध
- ब्राह्मण क्षत्रिय सम्बन्ध
- मन्त्रिपरिषद्
- जनसंसद
- राज्य में विधि का सर्वोपरि स्थान
- राज्य में दण्ड की महत्ता
- न्याय व्यवस्था
- न्याय के स्रोत
- क्षेत्रीय प्रशासन
- प्रमुख अधिकारी
- आर्थिक व्यवस्था
- कोष की व्यवस्था
- कर संचय का सिद्धान्त
- विविध कर
- सैनिक व्यवस्था
- गुप्तचर
- राजदूत
- पुलिस
- षडगुण्य नीति एवं उसका व्यवहारिक पक्ष
- गुण एवं संघ राज्य

- पुर और राजपद

इकाई–4 प्राचीन भारत में राज्य की उत्पत्ति और स्वरूप

- अध्ययन के स्रोत
- छठी शताब्दी ईसापूर्व की राजनैतिक व्यवस्था
- प्राचीन भारत में राज्य की उत्पत्ति
- प्राचीन भारत में राज्य की उत्पत्ति सम्बन्धी प्रचलित विचारधाराएँ
- प्राचीन भारत में राज्य का स्वरूप

इकाई–5 राज्य के प्रकार एवं कार्य

- राजतन्त्र के प्रकार

राजतंत्र, गणतंत्र, वैराग्य, स्वराज्य, योग्य,परयेष्ठी, विपृ, समर्थ राज पेत्तानिका, राष्ट्रिका, द्वैराज्य

साम्राज्य

राज्य के कार्य

प्रजारक्षण, लोक कल्याण अर्थव्यवस्था पर नियत्रण सामाजिक व्यवहार का निर्वाह व नियन न्याय की व्यवस्था प्रशासनिक प्रणाली का निर्वाह सम्बन्धों का निर्वाह

इकाई–6 प्राचीन भारत में जनपद : स्वरूप का संगठन

जनपद : अवधारणा, ऐतिहासिक विकास, संगठन और व्यवस्था

इकाई–7 गण और संघ

प्राचीन भारतीय गणराज्य

संविधान एवं प्रशासन

गणराज्य ह्रास एवं पतन

इकाई–8 ईसापूर्व छठीं शताब्दी में राज्य और साम्राज्य का उदय

राज्यों के उदय की पृष्ठभूमि

ईसापूर्व छठी सदी में जनपद राज्यों का उदय

जनपदों के नाम तथा भौगोलिक वितरण

1 अंग

2 मगध

3 काशी

4 कौशल

5 वज्जि

6 मल्ल

7 चेदि

8 वत्स

9 कुरू

10 पांचाल

11 मत्स्य

12 सूरसेन

13 अश्मक

14 अवन्ति

15 गंधार

16 कम्बोज

राज्य की उत्पत्ति सम्बन्धी सिद्धान्त

- राज्य की उत्पत्ति का अनुबन्ध
- राज्योत्पत्ति का दैवीय सिद्धान्त
- राज्योत्पत्ति का यूद्ध मूलक तथा बल सिद्धान्त
  प्राचीन भारत में साम्राज्य का उदय
  मगध साम्राज्य के विकास की पृष्ठभूमि

इकाई–9 राजत्व (राजतन्त्र) उत्पत्ति, प्रकृति एवं कर्तव्य

राजत्व उत्पत्ति सम्बन्धित प्राचीन भारतीय विचारधाराएँ

1 चयन का सिद्धान्त

2 नवीन उत्पत्ति का सिद्धान्त

प्राचीन भारत में राजत्व की प्रकृति

प्राचीन भारत में राजत्व (राजतन्त्र) के कर्तव्य

इकाई–10 राजत्व का स्वरूप एवं उस पर नियन्त्रण (मर्यादाएँ)

राजत्व का स्वरूप एवं देवत्व का विकास

राजत्व पर नियंत्रण

सैद्धान्तिक नियंत्रण

- धर्म की सर्वोच्चता
- राजा का प्रजा पालकत्व एवं पैतृक सिद्धान्त
- राज धर्म की प्रतिष्ठा या दण्ड का सिद्धान्त
- राजत्व का संविदात्मक स्वरूप
  संस्थागत नियंत्रण
- निवार्चन
- सभा व समिति
- पुरोहित
- मंत्रिमंण्डल

- सत्ता का केन्द्रीकरण
- जनमत का भय

इकाई–11 व 16 प्राचीन भारत में विधि : स्वरूप एवं संहिताकरण

- विधि का स्वरूप
- विधि के स्रोत एवं सद्विताकरण

1 श्रुति

2 स्मृति (धर्मशास्त्र)

3 सूत्रकाल

4 स्मृतियुगीन विधि व्यवस्था

5 सदाचार

6 राजशासन

इकाई–12 व 17 धर्मशास्त्रों में राजनीतिक विचार

धर्मशास्त्र एवं उनकर वर्ण्य विकास

धर्मशास्त्रीय राजनीतिक चिन्तन

- विधि के स्रोत एवं सद्विताकरण
- राजा के गुण दायित्व
- राज्य के सात अंग
- मन्त्रिपरिषद्
- अन्य कर्मचारीगण

इकाई–13 व 18 प्राचीन भारत में प्रशासन

- न्यायिक प्रशासन का विकास
- न्यायालय व न्यायधीश
- संगठन का स्वरूप
- धर्म स्थीय व कंटक शोधन
- साक्ष्य
- साक्ष्य और साक्षी

इकाई–14 व 19 प्राचीन भारत में अपराध और दण्ड

- विधि का विकास
- विवाद के प्रकार
- न्यायलय
- दण्ड

इकाई–15 व 20 प्राचीन भारत में सैनिक संगठन (प्रारम्भ से 1200 ई0)

प्रागैतिहासिक एवं वैदिक काल में सैनिक संगठन

महाकाव्यों में ज्ञात सैनिक संगठन

- रामायण
- महाभारत

महाजनपदों का युग

मौर्य सैनिक संगठन

- मेगस्थनीज वर्णित सैन्य व्यवस्था
- अर्थशास्त्र वर्णित सैन्य व्यवस्था

शुंगकालीन सैन्य संगठन
सातवाहनकालीन सैन्य संगठन
शक–कुषाण सैन्य संगठन
गुप्त सम्राटों का सैनिक संगठन
वर्धनों का सैनिक संगठन
चोल सैनिक संगठन
चालुक्य सैनिक संगठन
राजपूत कालीन सैनिक व्यवस्था

इकाई–16 व 21 स्थानीय स्वशासन

स्थानीय स्वशासन का अर्थ एवं उददे्श्य

वैदिक काल में स्वशासन : सभा एवं समिति

रामायण एवं महाभारत काल

बौद्ध युगीन स्वशासन का स्वरूप

मौर्य प्रशासन में स्वशासन

- नगर प्रशासन
- ग्राम प्रशासन
- व्यवसायियों की श्रेणियॉ

चतुर्थ खण्ड– भारत में भक्ति आन्दोलन एवं सूफीवाद–1

इकाई–15 व 22 उद्भव और अवधारणा – दक्षिण भारत में भक्ति आन्दोलन

अडवार क ख ग

शैवनयनार– स्रोत, दार्शनिक, पृष्ठभूमि, रहस्यवाद (क)

शैवनयनार–(ख)

रामानुज : भक्ति को दार्शनिक पृष्ठभूमि की देन

इकाई–16 व 23 शंकराचार्य एवं उनका अद्वैव वेदान्त

शंकराचार्य का जीवन–वृतान्त

- शंकर का जन्म
- शिक्षा
- सन्यास ग्रहण

- विरोधियों से शास्त्रार्थ
- वेदान्तपीठों की स्थापना
- देहावसान

वेदान्त का विकास : वेदान्त का अर्थ, उपनिषदों से भाष्य तक अद्वैतवेदान्त के ग्रन्थ

शंकराचार्य का अद्वैत दर्शन

- सत्ता से त्रिविध स्तर
- परब्रह्म
- ईश्वर
- माया
- जगत
- जीव
- बन्धन और मोक्ष
- मोक्ष का स्वरूप
- ब्रह्म और जीव में सम्बन्ध

इकाई–17व 24 भारत में भक्ति आन्दोलन का विकास

- भक्ति ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में
- भक्ति आन्दोलन के उत्कर्ष के कारण
- मध्यकालीन भक्ति का स्वरूप
- मध्ययुगीन प्रमुख सन्त
- भक्ति आन्दोलन के सन्तो की देन एवं उनका प्रभाव
- परवर्ती सन्त

इकाई–18 व 25 इस्लाम का भक्ति आन्दोलन पर प्रभाव

- तसब्बुक की परिभाषा
- भक्ति आन्दोलन
- सन्त कबीर
- मलिक मुहम्मद जायसी
- मीरा
- गुरूनानक का भक्ति दर्शन
- राम भक्ति व कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय
- मुस्लिम शासको के समय सूफी सन्तों पर भक्ति आन्दोलन पर प्रभाव

इकाई–18 व 26 भक्ति सन्तों की विशेषताएँ

प्रमुख भक्ति सन्तों की विशेषताएँ

- रामानुज
- निम्बार्क
- माध्वाचार्य
- रामानन्द
- बल्लभाचार्य

- चैतन्य महाप्रभु
- मीराबाई
- सन्त कबीर
- गुरूनानक
- सन्त दादू
- सूरदास
- तुलसीदास

खण्ड–5

इकाई–20 व 27 सन्त कबीर को शिक्षाएँ एवं जीवन

तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था

एकेश्वरवादी विचारधारा का जन्म

इस्लामिक विचारधारा एवं भारतीय समाज

नवीन सामाजिक वर्गो का उदय

कबीर का काल

कबीर के उपदेश (शिक्षा)

कबीर पन्थ

कबीर पन्थियों की संख्या

इकाई–21 व 28 नानक एवं उनकी शिक्षाएँ, खालसा पन्थ की उत्पत्ति, विकास

सिद्धान्त एवं दर्शन

गुरूनानक का जीवन वृत्त

गुरूनानक का उपदेश

खालसा पन्थ का विकास

गुरू अंगद (1539–1552)

गुरू अमरदास (1552–1574)

गुरू रामदास (1574–1581)

गुरू अर्जुन (1581–1606)

गुरू हरगोविन्द (1606–1645)

गुरू तेगबहादुर (1664–1675)

गुरू गोबिन्द सिंह (1675–1708)

खालसा पन्थ का निर्माण

सिद्धान्त दर्शन अथवा खालसा पन्त की विशेषताएँ

मुख्य शब्द

इकाई–22 व 29 भक्ति आन्दोलन के अन्य सन्त एवं उनकी शिक्षाएँ

1 शंकराचार्य

2 रामानुजाचार्य

3 रामानन्द

4 माध्वाचार्य

5 निम्बार्क

6 बल्भाचार्य

7 चैतन्य महाप्रभु

8 नामदेव

9 सन्त दादू

10 रैदास

11 मीराबाई

12 सन्त धन्ना

13 सन्त पीपा

14 जय देव

इकाई–23 व 30 सांस्कृतिक संश्लेषण और भक्ति आन्दोलन

भक्ति आन्दोलन की उत्पत्ति एवं विकास

मध्य कालीन भक्ति आन्दोलन एवं भगवत पुराण

मध्य कालीन भक्ति आन्दोलन के प्रभु उन्नायक

मध्यकालीन धार्मिक विवरण और भक्ति आन्दोलन की आवश्यकता

कबीर की भक्ति का दर्शन

हिन्दू व मुस्लिम समाज पर पारस्परिक प्रभाव

इकाई–24 व 31 भक्त सन्तों का भारतीय समाज एवं संस्कृति में योगदान

दक्षिण भारत के सन्त : नयनार, आर अलवार सन्त, शंकराचार्य, रामानन्द निम्बार्क, मध्वाचार्य

उत्तर भारत के सन्त : रामानान्द, भल्लभाचार्य, चैतन्य, नामदेव, रैदास,कबीर, नानक, दादू, मीरा, तुलसीदास, तुकाराम

नव सामाजिक संरचना के निर्माण का प्रयास

मानव माल की एकता पर बल

मानवतावादी विचारों का पोषण

सात्विक आचरण पर बल

लोकभाषा का विकास एवं विस्तार

खण्ड–6 भारत में भक्ति आन्दोलन एवं सूफीवाद

इकाई–24 व 31 भारत के बाहर सूफीवाद की उत्पत्ति और विकास

- अर्थ
- परिभाषा
- उत्पत्ति
- विकास
- सूफियों का प्रथम वर्ग
- सूफियों की द्वितीय पीढी
- सूफियों की तृतीय पीढी
- 10वी शताब्दी में सूफीमत
- 11वी शताब्दी में सूफीमत
- 12 वी शताब्दी में सूफीमत
- 13 वी शताब्दी में सूफीमत

इमाम गजाकी

शेख अब्दुल कादिर जिलानी

शेख मुदीउद्दीन इब्ने अरवी

शेख शहाबुद्दीन उमर सुहरावर्दी

इकाई–25 व 32 सूफीमत का भारत में विकास

चिश्ती

- ख्वाजा मुइनद्दीन चिश्ती
- शेख फरीदुद्दीन चिश्ती
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- हजरत नासिरूद्दीन मेहमूद सुहरावर्दी
- शेख बहाउद्दीन जकरिया
- शेख नुरूउद्दीन मुबारक गजनवी
- काजी हमीदुद्दीन नागोरी
- शेख जलालुद्दीन तबरेजी
- शेख सदरूद्दीन आरिफ
- शेख जलालुद्दीन बुखारी
- शेख एकनुद्दीन अबुल फतह
- फिरदौसिया
- ख्वाजा एकनुद्दीन और ख्वाजा नाजिबुद्दीन
- शेख शफरूद्दीन याहया मनेरी
- शेख शफरूद्दीन के मुरीद
- अन्य सूफी सिलसिले
- सूफी सिलसिले के मकानी केन्द्र

सूफीमत का प्रभाव

इकाई–26 व 33 चिश्ती सिलसिले के प्रमुख सन्त और उनका सूफी आन्दोलन

प्रमुख चिश्ती सन्त और उनका सूफी आन्दोलन

- ख्वाजा मुइनद्दीन चिश्ती
- शेख बकक्तियारूद्दीन काकी
- शेख हमीदुद्दीन नागौरी
- बाबा फरीदगंज शंकर
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- हजरत नसीरूद्दीन चिराग देहलवी
- हजरत अमीर खुसरो
- शेख मोहिगुल्लाह इलाहाबादी
- जलालुद्दीन गेजूदराज
- शेख सलीम चिश्ती

इकाई–27 व 34 चिश्ती सन्तों खानकाही जीवन और राज्य के साथ सम्बन्ध खनकाह सम्बन्धी

शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी के विचार

चिश्ती खानकाह

- दैनिक जीवनचर्या
- खानकाह लोगों के कार्य
- खनकाह के निवासी
  खनकाह में आने वाले लोगों एवं उनकी समस्याएँ
  चिश्ती सन्तों का राज्य से सम्बन्धी दृष्टिकोण
  शासको की संगत से दूर रहना
  जागीर ग्रहण न करना

इकाई–28 व 35 भारत में सुहरावर्दी सिलसिले के प्रमुख सूफी तथा उनके शिक्षाए एवं

सिद्धान्त

सूफी शब्द का उद्गम

- प्रथम सूफी
- सिलसिला
- खानकाह
- विभिन्न सूफी परिभाषाओं का विकास
  प्रमुख सूफीमत एवं उनकी भारत में स्थापना
  भारत में सुहरावर्दी सिलसिला की प्रस्तावना व विचार
- राजस्थान
- बंगाल
- देहली
- मुल्तान
- कच्छ
- गुजरात
  सुहरावर्दी सूफियों की शिक्षा प्रणाली

खानकाह संगन
सुहरावर्दी सूफियों का राजनीतिक सम्बन्ध

- समाज कल्याण
- आलिमों से सम्बन्ध

खण्ड–7 भारत में भक्ति आन्दोलन एवं सूफीवाद

इकाई–29 व 36 सुहरावर्दी खनकाह और उनका राजनीतिक सम्बन्ध

खानकाह का अर्थ

खानकाह का उददे्श्य

सुहरावर्दी खानकाह का लक्षण

खानकाह के प्रतिबन्ध

सुहरावर्दी सिलसिले के राज्य और समाज के बारे में विचार

सुहरावर्दी सिलसिले के राजनैतिक और आर्थिक सम्बन्ध

इकाई–30 व 37 आन्ध्र प्रदेश की जनजातियों की दशा

श्रीराम राजू के नेतृत्व में पहाडी रेडियों के विद्रोह के पहलें उनके द्वारा किये गये विद्रोह

श्रीराम राजू का जीवन वृत्त

विद्रोह के कारण

विद्रोह की घटनाएँ

राजू की मृत्यु के बारें में विभिन्न मत

राजू की मृत्यु पर जनता की प्रतिक्रिया

आन्दोलन का प्रभाव

आन्दोलन की असफलता के कारण

विद्रोह का स्वरूप

इकाई–31 व 38 मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में आदिवासी आन्दोलन

आन्दोलन के समय आदिवासियों की सामाजिक, आर्थिक,एवं राजनैतिक तत्तकालीन परिस्थियॉ और कुछ भील आन्दोलन

मातीलाल तजावत का आदिवासी कृषक आन्दोलन

इकाई–32 व 39 अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना और आन्दोलन में

1951 तक उसकी भूमिका

किसानों के उनके स्थानी संगठनों का निर्माण तथा उनके संघर्ष

पंजाब, चम्पारण, खेडा, अकाली मोर्चा, मोपला विद्रोह, उत्तर प्रदेश, अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना : विस्तार संबिधान तथा

- स्थापना सम्मेलन के प्रमुख प्रस्ताव
- फैजपुर किसान कांग्रेस
- संगठन के संविधान तथा झण्डे का निर्माण

किसान सभा के सम्मेलन (1936–1951) तथा परित प्रमुख प्रस्ताव

- कौमिल्ला अधिवेशन, गया सम्मेलन, पलास सम्मेलन, बिहटा सम्मेलन भखना सम्मेलन, बेजबाडा सम्मेलन, नेत्रकोना सम्मेलन, सिकन्द दर्शन सम्मेलन
किसान सभा के तत्वाधान में हुए प्रमुख आन्दोलन
बकाश्त आन्दोलन, पुत्रप्राबायलर आन्दोलन तेलंगाना आन्दोलन

इकाई–33 व 40 तेलंगाना में कृषको का विद्रोह

भारत में कृषक आन्दोलन का स्वरूप (1818 ई0 1946 ई0)

तेलंगाना के कृषक आन्दोलन की प्रकृति

तेलंगाना के कृषक विद्रोह के कारण

आन्दोलन का उत्कर्ष एवं विकास

तेलंगाना के कृषक आन्दोलन के परिणाम

तेलंगाना के कृषक विद्रोह की असफलता के कारण

आन्दोलन क प्रति सरकार की नीति

खण्ड–8 भारत में किसान आन्दोलन (1818–1951 ई0)–1

इकाई–34 व 41 भारत में किसान आन्दोलन का परिचय

भूमि राजस्व तथा किसान असन्तोष

1857 के पूर्व आदिवासी किसान विद्रोह

1857 के पश्चात् के किसान विद्रोह

- नील उत्पादन किसानों का आन्दोलन
- पावना आन्दोलन
- महाराष्ट्र के किसान आन्दोलन
- विरसा मुण्डा का विद्रोह
- पंजाब का किसान आन्दोलन

गॉधी तथा किसान आन्देालन

- चम्पारण किसान आन्दोलन
- खेडा किसान आन्दोलन
असहयोग आन्दोलन के दौरान एवं पश्चात् किसान आन्दोलन
- अकाली मोर्चा
- मोपला विद्रोह
- अवध का किसान आन्दोलन
- बारदोली का किसान आन्दोलन
अखिल भारतीय किसान संगठन का गठन

प्रन्तों में कांग्रेसी सरकार, किसान समस्याएँ तथा किसान आन्दोलन

- बकश्त आन्दोलन
  स्वतन्त्रता की पूर्व सध्या पर किसान आन्दोलन
- तेभागा आन्दोलन
- तेलंगाना किसान आन्दोलन
- पुत्रमा बासलर आन्दोलन
  जमीदारी प्रथा के उन्मूलन के प्रयत्न

इकाई–35 व 42 अंग्रेजी शासन काल के अन्तर्गत भारत में कृषि संरचना

अंग्रेजी शासन व्यवस्था सें पूर्व कृषि संरचना का स्वरूप

भारत की आर्थिक सामाजिक व्यवस्था में कृषको की स्थिति

अंग्रेजी शासन काल के अर्न्तगत कृषि संरचना (1764–1947 ई0)

- द्वैध शासन के अर्न्तगत कृषि संरचना
- स्थाई बन्दोबस्त वयवस्था और कृषि संरचना
- लार्ड वैइक एवं कर्जन के शासन काल में कृषि संरचना
- कृषि संरचना का प्रभाव

इकाई–36 व 43 राजस्थान में जनजातियों के विद्रोह (1818–1900 ई0)

भीलो का परिचय एवं ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि

भीलो का विद्रोंह (1818–1825 ई)

- कारण
- घटनाएँ
- डूँगरपुर एवं बांसवाडा में अशान्ति

दौलतसिंह एवं गोविन्दा का विद्रोह 1826–28 ई0

भीलो के उत्पाद 1836–38 ई0

1810 से 1841 तक अंग्रेजो की भीलो के प्रति समीक्षा

मेवाड भील कोर्प्स की स्थापना (1841)

भीलो के विद्रोह एवं उनके द्वारा अशान्ति फैलाने की घटनाएँ 1844–1880

भील विद्रोह (1881)

कारण : आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक, मनोवैज्ञानिक, एवं अंग्रेजो के प्रति असन्तोष, आकस्मिक कारण।

घटनाएँ : बारापाल की पुलिस चौकी पर भीलो का हमला अन्य स्थानो पर विद्राह खेराबाडा का घेरा, अंग्रेजो की तैयारियाँ, रिखलदेव का समझौता समझौते की शर्तें।

विद्रोह के समय भीलो का आचरण

प्रभाव : भीलों के प्रतिरोध की घटनाएँ, भीलो के साथ एक नया समझौता प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार, भीलों के हितों के लिए कार्य करने के आदेश, शैल कांतर हितकारिणी

सभा की स्थापना, हाकिमों तथा भील गतियों में परामर्श की व्यवस्था, भील क्षेत्रों में सैनिक बल की वृद्धि

1883 से 1900 तक की छिटपुट घटनाएँ

1818–1900 तक भीलो के विद्रोह तथा प्रतिरोध आन्दोलन की विशेषताएँ

भीलों का विद्रोह (1818–23)

19 वी सदी भद्राजून के मीजाओं के उत्पाद

इकाई–37 व 44 सन्थाल विद्रोह (1855–56)

सन्थाल हूल यानि विद्रोह की पहली चिन्गारी

सन्थाल विद्रोह के कारण

सन्थाल विद्रोह के घटनाक्रम

विद्रोह की अवधि में सन्थाल का दमन

सन्थाल विद्रोह के परिणाम

इकाई–38 व 45 नील विद्रोह

नील की खेती की व्यवस्थाएँ

1810 एंव 1830 ई0 के कानून

नील विद्रोह के कारण

बंगाल के लेफ्टीनेट गवर्नर के आदेश

1860 ई0 की घटनाएँ तथा लेफ्टीनेट गवर्नर की घोषणा

प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रस्तावित विल एंव नील आयोग की नियुक्ति

प्रस्तावित विल का विरोध तथा आन्दोलन की लोकप्रियता

भारत सरकार का आदेश

सेस्क्रेटी ऑफ स्टेट की भारत के निर्णय के प्रति असहमति

नील आयोग का गठन व कार्य

भारत सरकार के प्रस्तावों का सेक्रेटी ऑफ स्टेट द्वारा विरोध

बंगाल में नील की खेती का अन्त

नील विद्रोह की विशेषताएँ

खण्ड–9

इकाई–39 व 46 पालन एवं बोगुरा क्षेत्रों में कृषको का विद्रोह

भारत में कृषक आन्दोलन का 1818 ई0 से 1870 ई0 के मध्य स्वरूप, बंगाल प्रन्त के पालना एवं बोगुरा क्षेत्रों के कृषक विद्रोह की प्रकृति

पालना एवं बोगुरा कृषक विद्रोह के कारण

कृषक आन्दोलन का उत्कर्ष एवं विकास

कृषक विद्रोह के प्रभाव

विद्रोह के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार की नीति

इकाई–40 व 47 दक्षिण भारत में कृषक विद्रेाह

भारत में कृषक आनदोलन की पृष्ठभूमि 1818 ई0 1857 ई0

दक्षिण भारत में हुए कृषक आन्दोलन की प्रकृति

कृषक विद्रोह के कारण

आन्दोलन का उत्कर्ष एवं विकास

दक्षिण के कृषक विद्रोह के प्रति सरकार की नीति

दक्षिण के कृषक विद्रोह के परिणाम

इकाई–41 व 48 राजस्थान एवं गुजरात में जनजातीय विद्रोह

गोविन्द गिरी का जीनव वृत्त

गोविन्द गिरी की शिक्षाएँ एवं भीलों की उन्नति का कार्यक्रम

गोविन्द गिरी के विरूद्ध सामन्तवादी तत्वों की विरोधी प्रतिक्रिया के कारण

गोविन्द गिरी एवं उनके अनुयायियों में असन्तोष के कारण

मानगढ का घेरा

गोविन्द गिरी व उसके साथियों पर मुकदमा

विद्रेाह का स्वरूप

भारत के अन्य जनजातियों के आन्दोलनों से गोविन्द

गिरी के आन्दोलन की भिन्नताएँ प्रभाव

इकाई–42 व 49 चम्पारण खेडा एवं बारदोली के किसान आन्दोलन

चम्पारण,खेडा एवं बारदोली के कृषक अन्दोलन से पूर्व भारत में कृषक

आन्दोलनो का स्वरूप (1818 ई0 से 1917 ई0)

चम्पारण खेडा एवं बारदोली के विकास आन्दोलन की प्रकृति कृषक विद्रोह के कारण

किसान आन्दोलनो का उद्भव एवं विकास

इकाई–43 व 50 बिन्जोलिया सामन्ती एवं उपनिवेशी शासन के विरूद्ध कृषक विद्रोह

(1887–1930)

बिन्जोलिया आन्दोलन की भूमिका (1887–1922)

बिन्जोलिया आन्दोलन का प्रभाव और बेगू आनदोलन

बिन्जोलिया आन्दोलन द्वितीय चरण (1927–1930)

इकाई–44 व 51 प्रथम विश्व युद्धोत्तर कृषि समस्याएँ और जागृति

प्रथम विश्व युद्धोत्तर कालकी कृषि समस्याएँ

प्रथम विश्व युद्धोत्तर काल के किसान आन्दोलन

प्रथम विश्व युद्धोत्तर काल के कृषक आन्दोलन का स्वरूप

प्रथम विश्व युद्धोत्तर काल के कृषक आन्दोलनो के परिणाम

इकाई–45 व 52 मोपला विद्रोह (1920–22 ई0)

मोपला कृषकों की स्थिति

19वी शदी के मोपला विद्रोह

मोपला विद्रोह के कारण

मोपला विद्रोह की घटनाएँ

मोपला विद्रोह का स्वरूप

मोपला विद्रोह के परिणाम

इकाई–46 व 53 उत्तर प्रदेश के किसान आन्दोलन में कांग्रेस और किसान सभी की भूमिका

किसान असन्तोष के कारण

किसान सभाओं का संगठन और कार्य

प्रतापगढ में किसान संघर्ष

रायबरेली में किसान संघर्ष

एका आन्दोलन

किसान आन्दालनो का स्वरूप

कांग्रेस और किसान संघर्ष

1920–22 के मध्य किसान संघर्ष

लागन बन्दी आन्दोलन की परिस्थितियॉ

1920–22 और 1930–32 के किसान आन्दोलन की तुलना

इकाई–47 व 54 बिहार के किसान आन्दोलनो में कांग्रेस और किसान सभा की भूमिका
(1920–1939)

बिहार प्रान्तीय किसान सभा की संगठन और प्रारम्भिक कार्य

किसान सभा और कांग्रेस समाजवादियों में सहयोग

कांग्रेस मंत्रिमण्डल की समझौतावादी नीति से किसानो में असन्तोष, बकाशत आन्दोलन

किसान सभा का घटता हुआ प्रभाव

इकाई–47 व 54 बंगाल में तेभागा अन्दोलन (1946–1947 ई0)

भारत में कृषक आन्दोलन की पृष्टभूमि एवं स्वरूप (1818–1946 ई0)

तेभागा कृषक आन्दोलन की प्रकृति

तेभागा विद्रोह के कारण
आन्दोलन का उद्‌भव, घटना एवं विकास
तेभागा कृषक विद्रोह के प्रति सरकार की नीति
तेभागा विद्रोह के परिणाम

MAHY-07

भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास

(7 अ)

भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास

- भौगोलिक पृष्ठभूमि और संस्कृति
- प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक व्यवस्था
- वैदिक जीवन और विचार
- राजनीतिक तथा प्रशासनिक संस्थाएँ
- हिन्दुओं का सामाजिक संगठन
- आर्थिक जीवन
- शिक्षा पद्धति और साहित्य
- धर्म तथा दर्शन
- ललित कलाएँ शिल्प तथा साहित्य
- विदेशो में भारतीय संस्कृति का प्रभाव

(7 ब)

- राजनीतिक और प्रशासनिक संस्थाएँ
- समाज और धर्म
- आर्थिक स्थिति
- शिक्षा साहित्य और विज्ञान
- कला और स्थापत्य
- समाज और धर्म

(7 स)

- प्रशासनिक और संवैधानिक घटनाएँ
- समाज और धर्म
- आर्थिक जीवन
- शिक्षा, साहित्य और विज्ञान
- कला, स्थापत्य, संगीत और नृत्य

MAHY-08

आदिकाल के भारतीय सामाजिक संरचना का क्रमिक विकास

(8 अ)

प्राचीन भारत में भौतिक प्रगति एवं सामाजिक संरचनाएँ

- प्राचीन भारत में सामाजिक संरचनाओं की समस्या
- ऋग्वेद के प्रारम्भिक भागो में सम्पत्ति तथा जीविका के प्रकार
- ऋग्वैदिक समाज में लूट की सम्पत्ति वितरण तथा विभेदीकरण
- उत्तर वैदिक काल और चित्रित मृदभांड संस्कृति
- गंगा द्वारा विभाजित मैदान तथा गंगा के उपरी तटवर्ती क्षेत्र में भौगालिक विकास एवं सामाजिक संरचनाएँ (लगभग 1000–500 ई0 पू0)
- उत्पादक शक्तियों तथा मध्य गंगा के तटवर्ती क्षेत्र में बुद्ध के काल उनका समाजिक निहितार्थ
- बौद्ध धर्म के उत्पत्ति का भौतिक वातातरण
- महाकाव्यों में सामाजिक विकास की प्रवृत्तियॉ

(8 ब)

- सल्तनत काल में राज्य का स्वरूप
- सल्तनत काल में राजत्व सिद्धान्त
- केन्दीय शासन व्यवस्था एवं राजमहल के कर्मचारी
- प्रान्तीय एवं स्थानीय प्रशासन
- सल्तनत कालीन सैन्य व्यवस्था
- सल्तनत कालीन वित व्यवस्था
- सल्तनत कालीन न्याय व्यवस्था
- मुगलो का केन्द्रीय प्रशासन
- मुगलो का प्रान्तीय व स्थानीय प्रशासन
- मनसबदारी प्रथा
- मुगलकालीन न्याय –व्यवस्था
- मध्यकाल में स्त्रियों की दशा
- भारत में इस्लाम का पदार्पण व भक्ति आन्दोलन का विकास
- सूफीवाद
- मध्यकाल में स्थापत्य कला का विकास
- मध्यकाल में चित्रकला का विकास
- दक्षिण के हिन्दू मुसलमान राज्यों का प्रशासन
- मध्यकालीन दक्षिण भारतीय समाज एवं संस्कृति

(8 स)

- वर्णजाति व्यवस्था और मर्दवाद सम्बन्धित इतिहास लेखन का सर्वेक्षण
- ऋग्वैदिक समाज में सोपानीकरण : साक्ष्य और प्रतिमान
- आर्यो का प्रश्न
- प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में सामाजिक सोपानीकरण और गहपति की बदलती अवधारणा
- जाति और हिन्दू धर्म : ब्राह्मणीय एकीकरण के बदलते प्रतिमान

MAHY-09

प्लासी से विभाजन तक : आधुनिक भारत का इतिहास

1. अठारहवीं सदी का संक्रमण
1.1 मुगल साम्राज्य का पतन
1.2 क्षेत्रीय शक्तियो का उदय
1.3 ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना
2. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य
2.1 साम्राज्यवादी विचारधारा
2.2 संसद और साम्राज्य
2.3 मालगुजारी का दोहन
2.4 शासन तंत्र
2.5 साम्राज्य और अर्थव्यवस्था
3. आरम्भिक भारतीय प्रत्युत्तर– सुधार और विद्रोह
3.1 सामाजिक और धार्मिक सुधार
3.2 किसान और आदिवासी विद्रोह
3.3 1857 का विद्रोह

4. भारतीय राष्ट्रवाद का उदय
4.1 भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास–लेखन
4.2 कृषक समाज और कृषक असंतोष
4.3 नया मध्यवर्ग और राष्ट्रवाद का उदय
4.4 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना
5. आरम्भिक राष्ट्रवाद–असंतोष और विरोध
5.1 नरमपंथी नेतृत्व और आर्थिक राष्ट्रवाद
5.2 हिंदू पुनरूत्थानवाद और राजनीति
5.3 गरमपंथी राजनीति का उदय और स्वदेशी आन्दोलन
5.4 मुस्लिम राजनीति और मुस्लिम लीग की स्थापना

6. गॉधीवादी राजनीति का युग
6.1 सीमित स्वशासन का प्रलोभन 1909–19
6.2 महात्मा गॉधी का आगमन
6.3 खिलाफत और सहयोग आन्दोलन
6.4 सविनय अवज्ञा आन्दोलन
6.5 1935 का अधिनियम कागजी संघ और रजवाडं
7. भारतीय राष्ट्र के विभिन्न स्वर
7.1 मुसलमानो का अलगाव
7.2 गैर–ब्राह्मणो और दलित प्रतिरोध
7.3 व्यापार और राजनीति
7.4 मजदूर वर्ग के आन्दोलन
7.5 स्त्रियों की भागीदारी
8. विभाजन के साथ स्वतंत्रता
8.1 भारत छोडों आन्दोलन
8.2 उथल–पुथल का दशक
8.3 विभाजन के साथ सवतंत्रता की दिशा
9. स्वतंत्रता और विभाजन के पश्चात

9.1 परिवर्तन का काल
9.2 विभाजन और शरणार्थी
9.3 कश्मीर, हैदराबाद और साम्यवादी
9.4 संविधान एवं लोकतंत्र
9.5 नेहरूवादी राष्ट्र और इसकी राजनीति
9.6 कांग्रेस प्रणाली का पतन

MAHY-10

पर्यटन उद्भव एवं विकास

क्रसं.	अध्याय
1	पर्यटन उदभव एवं विकास
2	पर्यटनः प्रेरणा एवं स्वरूप
3	आधारिक संरचना एवं पर्यटन विकास
4	पर्यटन उद्योग एवं अवयव
5	पर्यटन उद्योग एवं उसका प्रबन्ध
6	पर्यटन का आर्थिक सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव
7	पर्यटन उद्योग की समस्याएँ एवं भविष्य की चुनौतियॉ
8	पर्यटन सूचना स्त्रोत एवं साख्यिकी
9	पर्यटन मार्ग दर्शन एवं (गाइड) ट्रेवेल ऐजेन्सी एवं टूर ऑपरेटर
10	पर्यटन संगठन
11	पर्यटन के नये रूप